fClass:	**B.A. 1 year**	**Subject:**	**Music (Vocal/Instrumental)**
Course Type:	**DSC 1**	**Course Code:**	**MUSA103TH**
Course Name:	**Theroy**	**Paper Type:**	**Theory Paper II**

MUSIC

Lesson : 1 - 8

Dr. Nirmal Singh

Centre for Distance & Online Education (CDOE)
Himachal Pradesh University
Gyan Path, Summer Hill, Shimla-171005

विषय सूची

क्रम	इकाई	विषय सूची	पृ. सं
1		विषय सूची	2
2		प्राक्कथन	3
3		पाठ्यक्रम	4
4	इकाई 1	अलंकार	5-18
5	इकाई 2	अब्दुल करीम खाँ और जयदेव का जीवन परिचय	19-28
6	इकाई 3	पं० विष्णु नारायण भातखण्डे और पंडित रविशंकर	29-40
7	इकाई 4	एकताल और झप ताल	41-50
8	इकाई 5	आश्रय राग और गमक	51-63
9	इकाई 6	थाट और श्रुति	64-77
10	इकाई 7	वादी, संवादी, अनुवादी और विवादी स्वर और राग लक्षण	78-88
11	इकाई 8	राग यमन,राग भूपाली और राग विहाग	89-99
12		महत्त्वपूर्ण प्रश्न- कार्यभार	100

प्राक्कथन

संगीत स्नातक के नवीन पाठ्यक्रम के क्रियात्मक विषय के MUSA103TH में संगीत से सम्बन्धित उपयोगी सामग्री का समावेश किया गया है। संगीत में प्रायोगिक तथा सैद्धान्तिक दोनों पक्षों का योगदान रहता है। गायन तथा वादन में भी इन्हीं दोनों पक्षों का महत्वपूर्ण स्थान रहता है। प्रस्तुत पाठ्यक्रम में संगीत की सैद्धान्तिक परीक्षा को ध्यान में रखकर पाठ्य सामग्री दी गई है। इस पुस्तक के

इकाई । में अलंकार आदि का वर्णन किया गया है।

इकाई 2 में अब्दुल करीम खाँ और जयदेव का जीवन परिचय का वर्णन किया गया है।

इकाई 3 में पं० विष्णु नारायण भातखण्डे और पंडित रविशंकर आदि का वर्णन किया गया है।

इकाई 4 में एकताल और झप ताल आदि का वर्णन किया गया है।

इकाई 5 में आश्रय राग और गमक आदि का वर्णन किया गया है।

इकाई 6 में थाट और श्रुति का वर्णन किया गया है।

इकाई 7 में वादी, संवादी, अनुवादी और विवादी स्वर और राग लक्षण का वर्णन किया गया है।

इकाई 8 में राग यमन,राग भूपाली और राग विहाग का वर्णन किया गया है।

प्रत्येक इकाई में शब्दावली, स्वयं जांच अभ्यास प्रश्न तथा उत्तर, संदर्भ, अनुशंसित पठन, पाठगत प्रश्न दिए गए हैं।

प्रस्तुत पाठ्यक्रम को लिखने के लिए स्वयं के अनुभव से, संगीतज्ञों के साक्षात्कार से तथा संगीत से सम्बन्धित पुस्तकों द्वारा शिक्षण सामग्री एकत्रित की गई है। मैं उन सभी संगीतज्ञों तथा लेखकों का आभारी हूं जिनके ज्ञान द्वारा तथा जिनकी संगीत संबंधी पुस्तकों द्वारा शिक्षण सामग्री को यहां लिया गया है। आशा है कि विद्यार्थियों के लिए यह पुस्तक लाभप्रद होगी।

COURSE CODE MUSA103TH

B.A.1st Year

HINDUSTANI MUSIC (Vocal & Instrumental)

3 Lectures /week

Duration	Paper-II Theory (Unit-I)	Max Marks	Credits
3 hours.		50(35+15Assesment)	3

Title -Theory of Indian Music (General) & Biographies of Musicians, Composers & Musicologists.

There will be three sections, candidates shall have to answer one question from each section & two from any of the three sections, thus five questions in all.

SECTION-I

Study of the following terms:-
Mela (Thãt), ÃshrayRãga, RãgaLakshana, Shruti, Alankar, Gamak, Vadi-SamvãdiAnuvãdi-Vivãdi, VakraSwara, Varjit-Swara.

SECTION-II

Biographies & contributions of the following:-
Pt, Jaidev, Ustad Abdul Karim Khan, Pt. Bhatkhande, Pt. Ravi Shankar

SECTION-III

Study of following Rãgas&Tãla
Rãga- Yaman, Bhoopali, Bihag
Tãla- Ektãl, Jhaptãl.

इकाई -1
अलंकार

इकाई की रूपरेखा

1.1	भूमिका
1.2	उद्देश्य
1.3	अलंकार परिचय
	स्वयं जांच अभ्यास 1
1.4	अलंकारों के उदाहरण
	स्वयं जांच अभ्यास 2
1.5	सारांश
1.6	शब्दावली
1.7	स्वयं जांच अभ्यास प्रश्नों के उत्तर
1.8	संदर्भ
1.9	अनुशंसित पठन
1.10	पाठगत प्रश्न

1.1 भूमिका

संगीत (गायन तथा वादन) में, स्नातक के क्रियात्मक पाठ्यक्रम MUSA103TH की यह पहली इकाई है। इस इकाई में संगीत, विशेष रूप से गायन और सितार वाद्य के संदर्भ में, अलंकार का अर्थ परिचय और विस्तृत अध्ययन किया गया है।

उत्तर भारतीय शास्त्रीय संगीत में रागों का प्रस्तुतिकरण विशेष रूप से होता है, जो सुनने में मधुरता से युक्त, कर्णप्रिय, वैचित्रतापूर्ण तथा आनंददायक होता है। आज के समय में शास्त्रीय संगीत के कलाकार रागों को अपने मंच प्रदर्शन के समय प्रस्तुत करते हैं। रागों में मधुरता और वैचित्र्य लाने के लिए अलंकारों का अभ्यास किया जाता है। अलंकारों के अभ्यास से गायक की आवाज मे परिपक्क्वता और वादक के वादन मे मधुरता और तैयारी साफ झलकती है।

इस इकाई के अध्ययन के पश्चात् विद्यार्थी अलंकार विषय का अर्थ परिभाषा और अलंकारों के प्रकार और रूपों के बारे मे विस्तार से अध्ययन कर पाएंगे तथा साथ ही सितार वादन पर अलंकारों के अभ्यास से अपने वादन मे मधुरता ला सकेंगे। विद्यार्थी इस विषय के अध्ययन के पश्चात स्वयं अलंकार बनाने मे समर्थ हो सकेंगे।

1.2 उद्देश्य

इस इकाई का अध्ययन करने के पश्चात् विद्यार्थी

- अलंकार विषय का अर्थ समझ सकेंगे।
- अलंकार के प्रकारों को समझ सकेंगे।
- स्वयं अलंकारों की रचना कर सकेंगे।
- सितार वाद्य पर स्वयं रचित अलंकारों का अभ्यास कर पाएंगे, जिससे उनके वादन मे निखार आएगा।

इन उद्देश्यों के माध्यम से, विद्यार्थी न केवल अलंकार के तकनीकी पहलुओं को जान पाएंगे, बल्कि इसके गहरे सांगीतिक, सांस्कृतिक और भावनात्मक महत्व को भी समझ सकेंगे। इससे उनके संगीत के प्रति दृष्टिकोण में गहराई और

समृद्धि आएगी, साथ ही मंच प्रदर्शन मे परिपक्क्वता का अनुभव भी प्राप्त होगा, जो कि उनके भविष्य में सहायक सिद्ध होगा।

1.3 अलंकार परिचय

प्राचीन ग्रंथकार 'अलंकार' की परिभाषा इस प्रकार करते हैं:-

विशिष्ट वर्ण संदर्भलंकार प्रचक्षते।।

अर्थात् -कुछ नियमित वर्ण-समुदायों को 'अलंकार' कहते हैं। 'अलंकार' का अर्थ है 'आभूषण' या 'गहना। जिस प्रकार आभूषण शारीरिक शोभा बढ़ाते हैं, उसी प्रकार अलंकारों के द्वारा गायन की शोभा बढ़ जाती है। 'अभिनव रागमंजरी' में लिखा है :-

शशिना रहितेव निशा विजलेव नदी लता विपुष्पेव।

अविभूषिते कांता गीतिरलंकारहीना स्यात् ।।

अर्थात् - जैसे चन्द्रमा के बिना रात्रि, जल के बिना नदी, फूलों के बिना लता तथा आभूषणों के बिना स्त्री शोभा नहीं पाती, उसी प्रकार अलंकार-बिना गीत भी शोभा को प्राप्त नहीं होते ।

अलंकार को 'पलटा' भी कहते हैं। गायन सीखने से पहले विद्यार्थियों को अलंकार सिखाए जाते हैं, क्योंकि इसके बिना न तो अच्छा स्वर-ज्ञान ही होता है और न उन्हें आगे संगीत-कला में सफलता ही मिलती है। अलंकारों से राग-विस्तार में भी काफी सहायता मिलती है। अलंकारों के द्वारा राग की सजावट करके उसमें चार चाँद लगाए जा सकते हैं। तानें इत्यादि भी अलंकारों के आधार पर ही बनती हैं, जैसे 'सारे गरे गम ग म पऽ। रेग रे ग म प धऽ' इत्यादि। अलंकार वर्ण-समुदायों में ही होते हैं। उदाहरण के लिए वर्ण-समुदाय को लीजिए 'सा रे ग सा'। इसमें आरोही-अवरोही, दोनों वर्ण आ गए हैं। यह एक सीढ़ी मान लीजिए। अब इसी आधार पर आगे बढ़िए और पिछला स्वर छोड़कर आगे का स्वर बढ़ाते जाइए; रे ग म रे यह दूसरी मीढ़ी हुई; गमपग यह तीसरी सीढ़ी हुई। इसी प्रकार बहुत-से अलंकार तैयार किए जा सकते हैं।

शुद्ध स्वरों के अलावा कोमल तीव्र स्वरों के अलंकार भी तैयार किए जा सकते हैं, किन्तु उनमें यह ध्यान रखना आवश्यक होता है कि जिस राग में जो स्वर लगते हैं, वे ही स्वर उस राग के अलंकारों में मिल जाएँ।

स्वयं जांच अभ्यास 1

अलंकार का अर्थ क्या है?

अ) रंग

ब) सुर

स) बोल

द) आभूषण

1.2 अलंकार शोभा बढ़ाते हैं?

अ) गायन की

ब) स्वर वाद्य यंत्रों के वादन की (सितार, सरोद, वायलिन और सुरबहार आदि)।

स) इनमे से कोई नहीं

द) अ और ब दोनों।

1.3 गायन मे अलंकार का अभ्यास करने से क्या होता है?

अ) मंद्र सप्तक के स्वर पक्के होते हैं

ब) तार सप्तक के स्वर पक्के होते हैं

स) स्वरों पर पकड़ (तैयारी)

द) इनमे से कोई नहीं।

1.4 अलंकार तबला/पखावज वाद्य पर बजाए जा सकते हैं?

अ) हाँ

ब) नहीं

1.4 अलंकारों के उदाहरण
बिलावल थाट के अलंकार के कुछ उदाहरण-

1)

आरोह-सा रे ग म प ध नि सां।

अवरोह- सां नि ध प म ग रे सा।

2)

आरोह-सासा रेरे गग मम पप धध निनि सांसां।

अवरोह- सांसां निनि धध पप मम गग रेरे सासा।

3)

आरोह-सासासा रेंरेरे गग मम पपप धधध निनिनि सांसांसां।

अवरोह- सांसांसां निनिनि धधध पपप ममम गगग रेंरेरे सासासा।

4)

आरोह- सारेग रेगम गमप मपध पधनि धनिसां।

अवरोह-सांनिध निधप धपम पमग मगरे गरेसा

5)

आरोह-सारेगम रेगमप गमपध मपधनि पधनिसां।

अवरोह- सांनिधप निधपम धपमग पमगरे मगरेसा।

कल्याण थाट के अलंकार के कुछ उदाहरण-

1)

आरोह-सा रे ग म प ध नि सां।

अवरोह- सां नि ध प म ग रे सा।

2)

आरोह-सासा रेरे गग मम पप धध निनि सांसां।

अवरोह- सांसां निनि धध पप मम गग रेरे सासा।

3)

आरोह-सासासा रेंरेरे गग मम पपप धधध निनिनि सांसांसां।

अवरोह- सांसांसां निनिनि धधध पपप ममम गगग रेंरेरे सासासा।

4)

आरोह- सारेग रेगम गमप मपध पधनि धनिसां।

अवरोह-सांनिध निधप धपम पमग मगरे गरेसा

5)

आरोह-सारेगम रेगमप गमपध मपधनि पधनिसां।

अवरोह- सांनिधप निधपम धपमग पमगरे मगरेसा।

भैरव थाट के अलंकार के कुछ उदाहरण-

1)

आरोह-सा रे ग म प ध नि सां।

अवरोह- सां नि ध प म ग रे सा।

2)

आरोह-सासा रेरे गग मम पप धध निनि सांसां।

अवरोह- सांसां निनि धध पप मम गग रेरे सासा।

3)

आरोह-सासासा रेरेरे गग मम पपप धधध निनिनि सांसांसां।

अवरोह- सांसांसां निनिनि धधध पपप ममम गगग रेरेरे सासासा।

4)

आरोह- सारेग रेगम गमप मपध पधनि धनिसां।

अवरोह-सांनिध निधप धपम पमग मगरे गरेसा

5)

आरोह-सारेगम रेगमप गमपध मपधनि पधनिसां।

अवरोह- सांनिधप निधपम धपमग पमगरे मगरेसा।

भैरवी थाट के अलंकार के कुछ उदाहरण-

1)

आरोह-सा रे ग म प ध नि सां।

अवरोह- सां नि ध प म ग रे सा।

2)

आरोह-सासा रेरे गग मम पप धध निनि सांसां।

अवरोह- सांसां निनि धध पप मम गग रेरे सासा।

3)

आरोह-सासासा रेरेरे गग मम पपप धधध निनिनि सांसांसां।

अवरोह- सांसांसां निनिनि धधध पपप ममम गगग रेरेरे सासासा।

4)

आरोह- सारेग रेगम गमप मपध पधनि धनिसां।

अवरोह-सांनिध निधप धपम पमग मगरे गरेसा

5)

आरोह-सारेगम रेगमप गमपध मपधनि पधनिसां।

अवरोह- सांनिधप निधपम धपमग पमगरे मगरेसा।

खमाज थाट के अलंकार के कुछ उदाहरण-

1)

आरोह-सा रे ग म प ध नि सां।

अवरोह- सां नि ध प म ग रे सा।

2)

आरोह-सासा रेरे गग मम पप धध निनि सांसां।

अवरोह- सांसां निनि धध पप मम गग रेरे सासा।

3)

आरोह-सासासा रेरेरे गग मम पपप धधध निनिनि सांसांसां।

अवरोह- सांसांसां निनिनि धधध पपप ममम गगग रेरेरे सासासा।

4)

आरोह- सारेग रेगम गमप मपध पधनि धनिसां।

अवरोह-सांनिध निधप धपम पमग मगरे गरेसा

5)

आरोह-सारेगम रेगमप गमपध मपधनि पधनिसां।

अवरोह- सांनिधप निधपम धपमग पमगरे मगरेसा।

काफी थाट के अलंकार के कुछ उदाहरण-

1)

आरोह-सा रे ग म प ध नि सां।

अवरोह- सां नि ध प म ग रे सा।

2)

आरोह-सासा रेरे गग मम पप धध निनि सांसां।

अवरोह- सांसां निनि धध पप मम गग रेरे सासा।

3)

आरोह-सासासा रेरेरे गगग ममम पपप धधध निनिनि सांसांसां।

अवरोह- सांसांसां निनिनि धधध पपप ममम गगग रेरेरे सासासा।

4)

आरोह- सारेग रेगम गमप मपध पधनि धनिसां।

अवरोह-सांनिध निधप धपम पमग मगरे गरेसा

5)

आरोह-सारेगम रेगमप गमपध मपधनि पधनिसां।

अवरोह- सांनिधप निधपम धपमग पमगरे मगरेसा।

स्वयं जांच अभ्यास 2

1.5 अलंकार का थाट पहचानो ?

आरोह-सारेगम रेगमप गमपध मपधनि पधनिसां।

अवरोह- सांनिधप निधपम धपमग पमगरे मगरेसा।

अ) कल्याण थाट

ब) भैरवी

स) काफी

द) आसावरी

प) इनमे से कोई नहीं।

1.6 अलंकार का थाट पहचानो ?

आरोह-सारेगम रेगमप गमपध मपधनि पधनिसां।

अवरोह- सांनिधप निधपम धपमग पमगरे मगरेसा।

अ) कल्याण थाट

ब) भैरवी

स) काफी

द) आसावरी

प) इनमे से कोई नहीं।

1.7 अलंकार का थाट पहचानो ?

आरोह-सारेगम रेगमप गमपध मपधनि पधनिसां।

अवरोह- सांनिधप निधपम धपमग पमगरे मगरेसा।

अ) कल्याण थाट

ब) भैरवी

स) भैरव

द) आसावरी

प) इनमे से कोई नहीं।

1.8 अलंकार का थाट पहचानो ?

आरोह-सारेगम रेगमप गमपध मपधनि पधनिसां।

अवरोह- सांनिधप निधपम धपमग पमगरे मगरेसा।

अ) कल्याण थाट

ब) भैरवी

स) काफी

द) आसावरी

प) इनमे से कोई नहीं।

1.5 सारांश

अलंकार भारतीय शास्त्रीय संगीत का एक महत्वपूर्ण विषय है, जिसके बिना अच्छे संगीत की कल्पना भी नहीं की जा सकती। अलंकारों के अभ्यास से शास्त्रीय संगीत मे तैयारी और परिपक्क्वता आती है, जो श्रोताओं को अनायास ही मंत्रमुग्ध करती हैं। शास्त्रीय संगीत मे अलंकार अभ्यास से संगीतज्ञ के गायन वादन मे रंजकता और परिपक्क्वता आती है। अलंकार किसी भी राग मे या स्वरों के अनुसार ताल बद्ध तरीके से गाए एवं बजाए जा सकते हैं।

1.6 शब्दावली

- अलंकार (Alankar): जिस प्रकार एक स्त्री सुन्दर दिखने के लिए आभूषणों से खुद को सजाती है वही स्थान संगीत मे अलंकार का है।
- राग (Raga): संगीत का एक विशेष संरचनात्मक पद्धति, जो स्वरों के विशेष क्रम का उपयोग करके भावनात्मक और मनोरंजन को व्यक्त करता है।
- ताल (Taal): संगीत में अंकित समय स्तर को ताल कहा जाता है, जो गायन या वादन के साथ समय की गणना करने में मदद करता है।
- लय (Lay): संगीत में गति या चलन को लय कहा जाता है, जो ताल की गति को निर्दिष्ट करता है।
- रागिनी (Ragini): रागों की सहायक संगीत पद्धति जिसमें संगीत रागों के विभिन्न अनुभवों और भावों को व्यक्त करने के लिए मेलोडी और ताल का उपयोग किया जाता है।
- श्रुति (Shruti): संगीत में सबसे छोटे स्वर को श्रुति कहा जाता है, जो स्वर स्थान पर किसी भी विस्तार में पाया जा सकता है।
- स्वर (Swar): संगीत में विभिन्न ऊर्जाओं को स्थान देने वाले तारों को स्वर कहा जाता है, जो संगीत के मूल भाग हैं।

- मेलोडी (Melody): संगीत में स्वरों के विशेष क्रम का एक संरचित और आकर्षक संयोजन, जिससे एक गाना या संगीत कविता का निर्माण होता है।
- अलंकार (Alankaar): संगीत में आकर्षकता और सौंदर्य को बढ़ाने के लिए स्वरों या ताल के विशेष प्रयोग को अलंकार कहा जाता है।

1.7 स्वयं जांच अभ्यास प्रश्नों के उत्तर

आत्म-मूल्यांकन प्रश्न 1

1.1 उत्तर: द)

1.2 उत्तर: द)

1.3 उत्तर: स)

1.3 उत्तर: ब)

1.3 उत्तर: स)

आत्म-मूल्यांकन प्रश्न 2

1.5 उत्तर: द (आसावरी)

1.6 उत्तर: ब (भैरवी)

1.7 उत्तर: स (भैरव)

1.8 उत्तर: स (काफी)

1.8 संदर्भ

भातखंडे, विष्णुनारायण. (1970). कर्मिक पुस्तक मलिका. खंड 1-6, संगीत कार्यालय हाथरस।

श्रीवास्तव, हरिश्चद्र. (2015). राग परिचय (भाग 1), संगीत सदन प्रकाशन, इलाहबाद।

मृत्युंजय, डॉ. शर्मा. (2000). संगीत मैनुअल. ए.जी. पब्लिकेशन, दिल्ली।

श्रीवास्तव, हरिश्चद्र. (2010). राग परिचय (भाग 4), संगीत सदन प्रकाशन, इलाहबाद।

प्रो. केशव शर्मा द्वारा साक्षात्कार से प्राप्त जानकारी।

डॉ. मृत्युंजय शर्मा द्वारा साक्षात्कार से प्राप्त जानकारी।

डॉ. निर्मल सिंह द्वारा साक्षात्कार से प्राप्त जानकारी।

1.9 अनुशंसित पठन

श्रीवास्तव, हरिश्चद्र. (2015). राग परिचय (भाग 2), संगीत सदन प्रकाशन, इलाहबाद।

श्रीवास्तव, हरिश्चद्र. (1998). मधुर स्वरलिपि संग्रह. संगीत सदन प्रकाशन, इलाहबाद।

1.10 पाठगत प्रश्न

प्रश्न 1. अलंकार का परिचय लिखिए।

प्रश्न 2. थाट कल्याण मे 5 अलंकार लिखिए।

प्रश्न 3. थाट काफी मे 5 अलंकार लिखिए।

प्रश्न 4. थाट भैरवी मे 5 अलंकार लिखिए।

प्रश्न 5. अलंकार का अर्थ एवं परिभाषा दे। थाट भैरवी और अस्वावरी मे कोई दस अलंकार लिखिए।

इकाई -2
अब्दुल करीम खाँ और जयदेव का जीवन परिचय

इकाई की रूपरेखा

2.1	भूमिका
2.2	उद्देश्य
2.3	अब्दुल करीम खाँ जीवन परिचय
	स्वयं जांच अभ्यास 1
2.4	पंडित जयदेव जीवन परिचय
	स्वयं जांच अभ्यास 2
2.5	सारांश
2.6	शब्दावली
2.7	स्वयं जांच अभ्यास प्रश्नों के उत्तर
2.8	संदर्भ
2.9	अनुशंसित पठन
2.10	पाठगत प्रश्न

2.1 भूमिका

संगीत (गायन तथा वादन) में, स्नातक के क्रियात्मक पाठ्यक्रम MUSA103 की यह दूसरी इकाई है। इस इकाई में संगीत, विशेष रूप से गायन और सितार वाद्य के संदर्भ में, उस्ताद अब्दुल करीम खाँ और पंडित जयदेव का जीवन परिचय और इनके सांगीतिक योगदान का विस्तृत अध्ययन किया गया है।

संसार की कोई भी विधा/संगीत क्यों न हो, जाब तक उसका इतिहास न जाना जाए, उस संगीत को जड़ से जानना असंभव सा प्रतीत होता है। इसी प्रकार संगीत की बारीकियों को समझने के लिए संगीत से जुड़े उन महान संगीतज्ञों के बारे मे अध्ययन करना बहुत महत्त्वपूर्ण हो जाता है, जिन्होंने अपना सर्वस्व संगीत के लिए न्योछावर कर दिया। उन महान संगीत गुनीजनों के जीवन का गूढ़ता से अध्ययन किया जाता है और उनके समय मे संगीत की स्थिति का और उनके द्वारा किए गए संगीत के उत्थान का अध्ययन किया जाता है। इन गुनीजनों के द्वारा रचित रचनाओं लेखों और रागों के अध्ययन से संगीत विषय मे निपुणता प्राप्त की जा सकती है। उन्हीं महान संगीतज्ञों मे से उस्ताद अब्दुल करीम खाँ और पंडित जयदेव भी हैं। इनके जीवन का अध्ययन किसी भी संगीतज्ञ के लिए बहुत आवश्यक है। इनके जीवन परिचय से, इनके संगीत के प्रति समर्पण से कोई भी प्रेरित हुए बिना नहीं रह सकता अर्थात अनायास कि प्रेरित हो जाता है।

इस इकाई के अध्ययन के पश्चात् विद्यार्थी उस्ताद अब्दुल करीम खाँ और पंडित जयदेव के जीवन परिचय का विस्तार से अध्ययन कर सकेंगे और इनके द्वारा सांगीतिक योगदान का अध्ययन कर प्रेरणा पा सकते हैं।

2.2 उद्देश्य

इस इकाई का अध्ययन करने के पश्चात् विद्यार्थी

- उस्ताद अब्दुल करीम खाँ के सांगीतिक यात्रा को जान पाएंगे ।
- उस्ताद अब्दुल करीम खाँ के संगीत के प्रति निःस्वार्थ प्रेम और जनून को जान पाएंगे।
- उस्ताद अब्दुल करीम खाँ के सांगीतिक योगदान को जान पाएंगे।
- उस्ताद अब्दुल करीम खाँ के सांगीतिक योगदान के साथ साथ इनके शिष्यों और इनकी उपलब्धियों को जान पाएंगे।

- पंडित जयदेव के सांगीतिक यात्रा को जान पाएंगे ।
- पंडित जयदेव के संगीत के प्रति निःस्वार्थ प्रेम और जनून को जान पाएंगे।
- पंडित जयदेव के सांगीतिक योगदान को जान पाएंगे।
- पंडित जयदेव के सांगीतिक योगदान के साथ साथ इनके शिष्यों और इनकी उपलब्धियों को जान पाएंगे।

इन उद्देश्यों के माध्यम से, विद्यार्थी न केवल उस्ताद अब्दुल करीम खाँ और पंडित जयदेव के जीवन परिचय का अध्ययन कर परएंगे, बल्कि इसके गहरे सांगीतिक, सांस्कृतिक और भावनात्मक महत्व को भी समझ सकेंगे। इससे उनके संगीत के प्रति दृष्टिकोण में गहराई और समृद्धि आएगी, साथ ही मंच प्रदर्शन और सांगीतिक यात्रा मे परिपक्क्वता का अनुभव भी प्राप्त होगा, जो कि उनके भविष्य में सहायक सिद्ध होगा।

2.3 अब्दुल करीम खाँ

संगीत जगत स्व० अब्दुल करीम खाँ का बहुत ऋणी है। उन्होंने कई चोटी के कलाकारों का निर्माण किया। हीरा बाई बढ़ोदेकर, सरस्वती राने, रोशनारा बेगम, सुरेश बाबू माने, पंडित रामभाऊ कुन्द- गोल्कर (सवाई गन्धर्व), बहरे बुआ आदि कलाविज्ञों के निर्माण का श्रेय अब्दुल करीम खाँ को है। उन्होंने ही ठुमरी को सरस और लोकप्रिय बना दिया। उन्हें ख्याल, ठुमरी, भजन तथा मराठी भाव गीतों पर समान अधिकार था। उन्हीं के सतप्रयत्नों से अब करीब-करीब सभी गायक ठुमरी गाना पसन्द करने लगे हैं। कभी-कभी तो ऐसा देखा गया है कि स्वयं जनता की ओर से ठुमरी की पुकार हो जाती है।

खाँ साहब सहारनपुर जिले के किराना नामक गाँव के रहने वाले थे। इनका जन्म 11 नवंबर 1872 में हुआ। आपके पिता काले खाँ तथा चाचा अब्दुल्ला खाँ स्वयं अच्छे संगीतज्ञ थे जिनसे आपको संगीत की शिक्षा मिली। आपकी शिक्षा बचपन से ही शुरू हो गई थी और बालक करीम खाँ का मायन लोगों को आश्चर्य चकित कर देता था। बहुत छोटी सी उम्र से ही आप संगीत के जलसों में अपना कार्यक्रम देने लगे थे। थोड़ा बड़े होते ही आपको बड़ौदा दरबार में राजगायक नियुक्त कर लिया गया। केवल तीन वर्षों तक बड़ौदा नरेश की सेवा में रहे और उसके बाद कुछ दिनों तक बम्बई में रहने के बाद मिरज पहुँच गये ।

खाँ साहब स्वय एक उच्चकोटि के गायक हो चुके थे, किन्तु उनकी हार्दिक अभिलाषा अच्छे संगीतज्ञ और श्रोता उत्पन्न करने की थी। इस लिये उन्होंने एक संगीत विद्यालय की स्थापना सन् 1913 के लगभग पूना में की। उसका नाम 'आर्य संगीत विद्यालय' रक्खा। कुछ दिनों बाद आपने बम्बई में इस विद्यालय को शाखा खोली और स्वयं बम्बई में रहे। लगभग तीन वर्षों के बाद कुछ कारणवश्च विद्यालय बन्द कर देना पड़ा और फलस्वरूप बम्बई छोड़कर मिरज में रहने लगे।

एक बार एक संगीत कार्यक्रम के सिलसिले में आपको मिरज से मद्रास जाना पड़ा। वहाँ पर आपका कार्यक्रम बड़ा सफल रहा। वहाँ से दूसरे संगीत कार्यक्रम के सिलसिले में पाडेचरी जाना पड़ा। रास्ते में ही आपकी तबियत काफी खराब हो गई। यात्रा स्थगित कर देना पड़ो और सिंगपोयमकोलम स्टेशन पर 11 बजे रात्रि उतर जाना पड़ा। समय के साथ-साथ तबियत खराब होती गई। उन्हें भी अपने दिन करीब आता दिखाई पड़ने लगा। बिस्तर पर नमाज पढ़ी और दरबारी कान्हड़ा के स्वरों में खुदा की इबादत करने लगे। इसी प्रकार गाते-गाते उसी बिस्तर पर 27 अक्टूबर सन् 1937 का परलोक सिवार गये। वहाँ से उनका शव मद्रास लाया गया और वहां से मिरज, जहां उन्हें दफना दिया गया।

खाँ साहब दुबले पतले बदन के आदमी थे। स्वभाव के बहुत शांत और मृदु-भाषी थे। जैसा उनका गायन मधुर था वैसी ही उनकी बोल- चाल थी। ठुमरी गायन में तो बड़े प्रवीण थे। ठुमरी के कुछ रिकार्ड जो अक्सर ही आकाशवाणी से प्रसारित होते हैं, बड़े मधुर और आकर्षक हैं। आपकी गाई हुई 'मत जहियो राधे जमुना के तीर' तथा 'पिया विन नहीं आवत चैन' ठुमरियाँ बहुत प्रसिद्ध है। तार सप्तक में आपकी आवाज बड़ी सरलता से तथा स्वाभाविक ढंग से जाती थीं। बन्द गले का कोट और साफा ही उनका पहिनावा था। आपके हाथ में एक छड़ी रहती थी। यद्यपि कि आप अब नहीं रहे, किन्तु संगीत-जगत आपको कभी भी भुला नहीं सकता।

स्वयं मूल्यांकन प्रश्न

2.1) अब्दुल करीम खाँ कौन से गाँव के रहने वाले थे?

1) सहारनपुर

2) बोधगया

3) किराना

4) फतेहपुर

2.2) आर्य संगीत विद्यालय की स्थापना खान साहब ने कब की?

1) 1921

2) 1926

3) 1914

4) 1913

2.3) अब्दुल करीम खाँ का जन्म कब हुआ?

1) 1871

2) 1872

3) 1873

4) 1890

2.4) अब्दुल करीम खाँ संगीत की कौन सी विधा से संबंध रखते थे?

1) गायन

2) सितार वादन

3) नृत्य

4) सुरबहार वादन

2.5) अब्दुल करीम खाँ की मृत्यु कब हुई?

1) 27 अक्टूबर सन् 1937

2) 19 अक्टूबर सन् 1937

3) 01 अक्टूबर सन् 1937

4) 02 अक्टूबर सन् 1937

2.4 जयदेव

स्व० पंडित जयदेव एक और संस्कृत के प्रकाण्ड पंडित थे तो दूसरी ओर सगीत के। आपकी कृति 'गीतगोविन्द' एक अमर कृति है। इसमें आपको रचित अनेक गेय पद हैं जो आज भी वैष्णत्र मन्दिरों में गाये जाते हैं। आपने स्वय भी उन पदों के ऊपर राग और ताल का उल्लेख कर दिया है। इससे यह सिद्ध होता है कि उन पदों को आप गाते थे, किन्तु स्वर-लिपि न होने के कारण मौलिक स्वर-रचना प्राप्त नहीं होती । 'गीतगोविन्द' के पदों में राधा और कृष्ण की लालाओं का वर्णन है। इस ग्रन्थ का अनुवाद कई अभारतीय भाषाओं म भी हुआ है, जैस लेटिन, जमनी, अग्रेजी आदि । जयदेव कृत कुछ ध्रुपद भी मिलते हैं।

कवि जयदेव का जन्म बारहवी शताब्दी में बगाल के केन्दुला ग्राम में हुआ। पिता का नाम स्व० मजं। यदेव था। बाल्यकाल में माता-पिता दोनों की मृत्यु होने के कारण वे निराश होकर जगन्नाथपुरी चले गये और वहाँ पुरुषोत्तमधाम में निवास करन लगे। कुछ दिनो तक वहाँ रहने के बाद तीर्थयात्रा के लिए निकल पड़े। भ्रमण करने के कुछ दिनों बाद आप का विवाह हो गया। पत्नी के साथ आपने पुनः भ्रमण किया और 'गीत-गोविन्द' का रचना की। युवावस्था में ही स्त्रो की मृत्यु से आप में पुनः निराशा की भावना दोड़ गई और तभी पूर्ण रूप से वैराग्य ले लिया। आप वैष्णव सम्प्रदाय के महात्मा यशोदा-नन्दन के शिष्य हो गये । कहते हैं कि आप मृत्यु के कुछ दिनों पूर्व अपने ग्राम पहुँच गये थे। कुछ दिनों तक साधु जावन व्यतीत करने के बाद आपको वहाँ मृत्यु हो गई। इसी ग्राम में आपकी समाधि है जहाँ प्रति वर्ष मकर सक्रान्ति के दिन मेला लगता है।

स्वयं मूल्यांकन प्रश्न

2.1 जयदेव का जन्म कब हुआ?

1) ग्यारहवीं शताब्दी

2) बारहवीं शताब्दी

3) पंद्रहवीं शताब्दी

4) इनमे से कोई नहीं।

2.2 जयदेव की कृति का नाम क्या है?

1) नाद कंचन

2) संगीत

3) गीतगोविंद

4) कोई नहीं

2.3 'गीतगोविन्द' के पदों में किन की लीलाओं का वर्णन है?

1) राधा और कृष्ण

2) राम कृष्ण

3) दुर्गा देवी

4) ये सभी

2.4 जयदेव की समाधि पर किस दिन प्रति वर्ष मेला लगता है?

1) पूर्णिमा के दिन

2) अमावस्या के दिन

3) मकर सक्रांति

4) कोई नहीं

2.5 सारांश

उस्ताद अब्दुल करीम खाँ और पंडित जयदेव भारतीय शास्त्रीय संगीत का एक महत्वपूर्ण विषय है, जिसके बिना अच्छे संगीत की कल्पना भी नहीं की जा सकती। इनके जीवन परिचय के अध्ययन से इनके द्वारा रचित रचनाओं और कृतियों को समझने और जानने का अवसर मिलता है, जो किसी भी संगीत रसिक के सांगीतिक जीवन के लिए सोने पर सुहागे वाली बात हो जाती है। इनके जीवन परिचय के अध्ययन से शास्त्रीय संगीत के क्रियात्मक और रचनात्मक पक्ष मे मजबूती, तैयारी और परिपक्क्वता आती है, जो श्रोताओं को अनायास ही मंत्रमुग्ध करती हैं। शास्त्रीय संगीत मे संगीतज्ञ के गायन वादन और सांगीतिक सफर मे प्रेरणा, रंजकता और परिपक्क्वता आती है।

2.6 शब्दावली

- राग (Raga): संगीत का एक विशेष संरचनात्मक पद्धति, जो स्वरों के विशेष क्रम का उपयोग करके भावनात्मक और मनोरंजन को व्यक्त करता है।
- ताल (Taal): सप्तक के स्वरों को जब अलंकारों के रूप मे यार राग मे तानों या तोड़ों के रूप मे ताल के साथ बजाया जाता है तो श्रोता उसे सुनकर अनायास ही मंत्रमुग्ध हो जाता है। संगीत में अंकित समय स्तर को ताल कहा जाता है, जो गायन या वादन के साथ समय की गणना करने में मदद करता है।
- लय (Lay): संगीत में गति या चलन को लय कहा जाता है, जो ताल की गति को निर्दिष्ट करता है।
- रागिनी (Ragini): रागों की सहायक संगीत पद्धति जिसमें संगीत रागों के विभिन्न अनुभवों और भावों को व्यक्त करने के लिए मेलोडी और ताल का उपयोग किया जाता है।
- श्रुति (Shruti): संगीत में सबसे छोटे स्वर को श्रुति कहा जाता है, जो स्वर स्थान पर किसी भी विस्तार में पाया जा सकता है। श्रुतियों से ही सप्तक के स्वरों का निर्माण हुआ है।
- स्वर (Swar): संगीत में विभिन्न ऊर्जाओं को स्थान देने वाले तारों को स्वर कहा जाता है, जो संगीत के मूल भाग हैं।
- मेलोडी (Melody): संगीत में स्वरों के विशेष क्रम का एक संरचित और आकर्षक संयोजन, जिससे एक गाना या संगीत कविता का निर्माण होता है।
- सितार (Sitar): भारतीय शास्त्रीय संगीत का ऐसा तंत्री वाद्य यंत्र जो आज किसी भी परिचय का मोहताज नहीं रह गया है।

2.7 स्वयं जांच अभ्यास प्रश्नों के उत्तर

स्वयं जांच अभ्यास 1 प्रश्नों के उत्तर

2.1) उत्तर: 3

2.2) उत्तर: 4

2.3) उत्तर: 2

2.4) उत्तर: 1

2.5) उत्तरत: 1

स्वयं जांच अभ्यास 2 प्रश्नों के उत्तर

2.6 उत्तर: 2

2.7 उत्तर: 3

2.8 उत्तर: 1

2.9 उत्तर: 3

2.8 संदर्भ

भातखंडे, विष्णुनारायण. (1970). कर्मिक पुस्तक मलिका. खंड 1-6, संगीत कार्यालय हाथरस।

श्रीवास्तव, हरिश्चद्र. (2015). राग परिचय (भाग 1), संगीत सदन प्रकाशन, इलाहबाद।

मृत्युंजय, डॉ. शर्मा. (2000). संगीत मैनुअल. ए.जी. पब्लिकेशन, दिल्ली।

श्रीवास्तव, हरिश्चद्र. (2010). राग परिचय (भाग 4), संगीत सदन प्रकाशन, इलाहबाद।

प्रो. केशव शर्मा द्वारा साक्षात्कार से प्राप्त जानकारी।

डॉ. मृत्युंजय शर्मा द्वारा साक्षात्कार से प्राप्त जानकारी।

डॉ. निर्मल सिंह द्वारा साक्षात्कार से प्राप्त जानकारी।

2.9 अनुशंसित पठन

श्रीवास्तव, हरिश्चद्र. (2015). राग परिचय (भाग 2), संगीत सदन प्रकाशन, इलाहबाद।

श्रीवास्तव, हरिश्चद्र. (1998). मधुर स्वरलिपि संग्रह. संगीत सदन प्रकाशन, इलाहबाद।

2.10 पाठगत प्रश्न

उस्ताद अब्दुल करीम खाँ

प्रश्न 1. उस्ताद अब्दुल करीम खाँ का संक्षिप्त परिचय लिखिए।

प्रश्न 2. उस्ताद अब्दुल करीम खाँ का संक्षिप्त जीवन परिचय और इनके सांगीतिक योगदान पर विस्तृत वर्णन कीजिए।

प्रश्न 3. उस्ताद अब्दुल करीम खाँ का जीवन परिचय और इनकी सांगीतिक उपलब्धियों पर विस्तृत प्रकाश डालें।

प्रश्न 4. उस्ताद अब्दुल करीम खाँ द्वारा रचित रचनाओं का विस्तार सहित वर्णन करें।

पंडित जयदेव

प्रश्न 1. पंडित जयदेव का संक्षिप्त परिचय लिखिए।

प्रश्न 2. पंडित जयदेव का संक्षिप्त जीवन परिचय और इनके सांगीतिक योगदान पर विस्तृत वर्णन कीजिए।

प्रश्न 3 पंडित जयदेव का जीवन परिचय और इनकी सांगीतिक उपलब्धियों पर विस्तृत प्रकाश डालें।

प्रश्न 4. पंडित जयदेव द्वारा रचित रचनाओं एवं कृतियों का विस्तार सहित वर्णन करें।

इकाई -3
पं० विष्णु नारायण भातखण्डे और पंडित रविशंकर

इकाई की रूपरेखा

3.1	भूमिका
3.2	उद्देश्य
3.3	पं० विष्णु नारायण भातखण्डे जीवन परिचय
	स्वयं जांच अभ्यास 1
3.4	पंडित रविशंकर जीवन परिचय
	स्वयं जांच अभ्यास 2
3.5	सारांश
3.6	शब्दावली
3.7	स्वयं जांच अभ्यास प्रश्नों के उत्तर
3.8	संदर्भ
3.9	अनुशंसित पठन
3.10	पाठगत प्रश्न

3.1 भूमिका

संगीत (गायन तथा वादन) में, स्नातक के क्रियात्मक पाठ्यक्रम MUSA103 की यह इकाई तीसरी है। इस इकाई में संगीत, विशेष रूप से गायन और सितार वाद्य के संदर्भ में, पं० विष्णु नारायण भातखण्डे जीवन परिचय और पंडित रविशंकर का जीवन परिचय और इनके सांगीतिक योगदान का विस्तृत अध्ययन किया गया है।

संसार की कोई भी विधा/संगीत क्यों न हो, जाब तक उसका इतिहास न जाना जाए, उस संगीत को जड़ से जानना असंभव सा प्रतीत होता है। इसी प्रकार संगीत की बारीकियों को समझने के लिए संगीत से जुड़े उन महान संगीतज्ञों के बारे मे अध्ययन करना बहुत महत्त्वपूर्ण हो जाता है, जिन्होंने अपना सर्वस्व संगीत के लिए न्योछावर कर दिया। उन महान संगीत गुनीजनों के जीवन का गूढ़ता से अध्ययन किया जाता है और उनके समय मे संगीत की स्थिति का और उनके द्वारा किए गए संगीत के उत्थान का अध्ययन किया जाता है। इन गुनीजनों के द्वारा रचित रचनाओं लेखों और रागों के अध्ययन से संगीत विषय मे निपुणता प्राप्त की जा सकती है। उन्हीं महान संगीतज्ञों मे से पं० विष्णु नारायण भातखण्डे जीवन परिचय और पंडित रविशंकर भी हैं। इनके जीवन का अध्ययन किसी भी संगीतज्ञ के लिए बहुत आवश्यक है। इनके जीवन परिचय से, इनके संगीत के प्रति समर्पण से कोई भी प्रेरित हुए बिना नहीं रह सकता अर्थात अनायास कि प्रेरित हो जाता है।

इस इकाई के अध्ययन के पश्चात् विद्यार्थी पं० विष्णु नारायण भातखण्डे जीवन परिचय और पंडित रविशंकर के जीवन परिचय का विस्तार से अध्ययन कर सकेंगे और इनके द्वारा सांगीतिक योगदान का अध्ययन कर प्रेरणा पा सकते हैं।

3.2 उद्देश्य

इस इकाई का अध्ययन करने के पश्चात् विद्यार्थी

- पं० विष्णु नारायण भातखण्डे के सांगीतिक यात्रा को जान पाएंगे ।
- पं० विष्णु नारायण भातखण्डे के संगीत के प्रति निःस्वार्थ प्रेम और जनून को जान पाएंगे।
- पं० विष्णु नारायण भातखण्डे के सांगीतिक योगदान को जान पाएंगे।

- पं० विष्णु नारायण भातखण्डे के सांगीतिक योगदान के साथ साथ इनके शिष्यों और इनकी उपलब्धियों को जान पाएंगे।
- पं. रवि शंकर के सांगीतिक यात्रा को जान पाएंगे ।
- पं. रवि शंकर के संगीत के प्रति निःस्वार्थ प्रेम और जनून को जान पाएंगे।
- पं. रवि शंकर के सांगीतिक योगदान को जान पाएंगे।
- पं. रवि शंकर के सांगीतिक योगदान के साथ साथ इनके शिष्यों और इनकी उपलब्धियों को जान पाएंगे।

इन उद्देश्यों के माध्यम से, विद्यार्थी न केवल पं० विष्णु नारायण भातखण्डे और पं. रवि शंकर के जीवन परिचय का अध्ययन कर परएंगे, बल्कि इसके गहरे सांगीतिक, सांस्कृतिक और भावनात्मक महत्व को भी समझ सकेंगे। इससे उनके संगीत के प्रति दृष्टिकोण में गहराई और समृद्धि आएगी, साथ ही मंच प्रदर्शन और सांगीतिक यात्रा मे परिपक्क्वता का अनुभव भी प्राप्त होगा, जो कि उनके भविष्य में सहायक सिद्ध होगा।

3.3 पं० विष्णु नारायण भातखंडे

पं० विष्णु नारायण भातखण्डे का जन्म 10 अगस्त सन् 1860 को बम्बई प्रांत के बालकेश्वर नामक स्थान में कृष्ण जन्माष्टमी के दिन हुआ। उन्हें अपने पिता से संगीत सीखने की प्रेरणा मिली। अतः उन्होंने अध्ययन के साथ-साथ संगीत शिक्षा भी ग्रहण की और सितार, गायन और बांसुरी तीनों का अच्छा अभ्यास किया।

सेठ बल्लभ दास से सितार तथा गुरूराव जी बुआ बेलबाथकर, जयपुर के मुहम्मद अली खाँ, ग्वालियर के पंडित एकनाथ, रामपुर के कलबे अली खाँ आदि व्यक्तियों से गायन सीखा । सन् 1883 में बी० ए० और 1890 में एल० एल० बी० की परीक्षायें उत्तीणं की। इसके पश्चात् कुछ समय तक वकालत भी करते रहे, किन्तु इसमें उनका मन न लगा। उनकी रुचि संगीत से थी और वे संगीत-जगत में ही रहना चाहते थे ।

उन्होंने देश के विभिन्न भागों में भ्रमण किया और संगीत के प्राचीन ग्रंथों की खोज की। भ्रमण में जहाँ भी कोई सगीत विद्वान का पता चला उससे मिलने गये। उससे भावों का विनिमय किया और जो कुछ भी जान धन देकर, सेवा कर अथवा शिष्य बनकर भी प्राप्त हो सका उन्होंने निसंकोच प्राप्त किया। कहीं-कहीं तो उन्हें बहुत दिक्कतें भी उठानी पड़ीं।

उन्होंने विभिन्न रागों के बहुत से गीत एकत्रित किये और उनकी स्वरलिपि 'भातखण्डे क्रमिक पुस्तक' 6 भागों में सग्रहित कर जनता के सामने रक्खा। यह वह समय था जब कि किसी व्यक्ति को केवल एक गीत सीखने के लिये सालों तक अपने गुरू को सेवा करनी पड़ती थी। इस तरह उन्होंने संगीत की बहुत बड़ी कमी दूर की भातखण्डे जी ने क्रियात्मक संगीत को लिपि-बद्ध करने के लिये एक नवीन स्वर-लिपि पद्धति की रचना की, जिसका प्रचार उत्तरी हिन्दुस्तान में बहुत अधिक है। यह पद्धति भातखंडे स्वरलिपि पद्धति के नाम से प्रसिद्ध है।

भातखण्डे जी के पूर्व राग-रागिनी पद्धति प्रचार में थी। उन्होंने को उसकी कमियों को अनुभव किया और उसके स्थान पर थाट-राग पद्धति को मान्यता दी और उसका प्रचार किया। धीरे-धीरे यह पद्धति सर्वत्र प्रचार में आ गई । जिस समय भारत में रेडियो नहीं था, उस समय भातखण्डे जी ने संगीत के प्रचार हेतु सगीत-सम्मेलन की कल्पना की और उन्होंने सन्–1916 में बड़ौदा नरेश की सहायता से प्रथम संगीत-सम्मेलन सफलता पूर्वक आयोजित किया। इस सम्मेलन में 'अखिल भारतीय संगीत अकादमी' स्थापित करने का प्रस्ताव सर्वसम्मति द्वारा पास हुआ। शीघ्र ही उनकी स्थापना हुई, किन्तु अधिक समय तक न चल सकी । सन् 1925 तक उन्होंने पाँच संगीत-सम्मेलन आयोजित किये ।

उनके द्वारा रचित मुख्य पुस्तकों की सूची इस प्रकार है-हिन्दुस्तानी संगीत पद्धति (क्रमिक पुस्तक मालिका 6 भागों में), भातखण्डे संगीत शास्त्र चार भागों में, अभिनव राग मंजरी, लक्ष्य संगीत, स्वर मालिका आदि। आधुनिक काल में संगीत के शास्त्रीय पक्ष की ओर जनता का ध्यान आकर्षित करने का सर्वप्रथम श्रेय स्व० भातखण्डे जी को है। उन्होंने सगीत के लिये सर्वस्व त्याग क्रिया ।

इस प्रकार भातखण्डे जी जीवन पर्यन्त संगीत की अथक सेवा करते रहे और 19 सितम्बर 1936 को उनका स्वर्गवास हो गया। उनके प्रमुख शिष्यों में भातखंडे संगीत विद्यापीठ, लखनऊ के भूतपूर्व प्रिसिपल कृष्ण नारायण रतनजनकर थे।

स्वयं मूल्यांकन प्रश्न

3.1) पं० विष्णु नारायण भातखण्डे ने एलएलबी कब की?

1) 1888

2) 1855

3) 1890

4) इनमे से कोई नहीं

3.2) पं० विष्णु नारायण भातखण्डे की संगीत जगत को देंन?

1) 10 थाट

2) राग रागिनी

3) रागांग पद्धति

4) इनसे से कोई नहीं

3.3) पं० विष्णु नारायण भातखण्डे का जन्म कब हुआ?

1) 1760

2) 1860

3) 1864

4) 1902

3.4 पं० विष्णु नारायण भातखण्डे का जन्म स्थान ?

1) मध्य प्रदेश

2) मुंबई

3) उत्तर प्रदेश

4) कर्नाटक

3.5 पं० विष्णु नारायण भातखण्डे संगीत की कौन सी विधा से संबंध रखते थे?

1) गायन सितार वायलिन

2) गायन, सितार और बाँसुरी वादन

3) नृत्य

4) सुरबहार वादन

3.4 पंडित रवि शंकर

विश्वविख्यात कला साधक, सुप्रसिद्ध सितार वादक 'भारत रत्न' पं. रवि शंकर जिन्हें पाश्चात्य जगत में अपनी कलात्मक प्रतिभा व ज्ञान के बल पर भारतीय संगीत को लोकप्रिय बनाने में अपना अप्रतिम योगदान दिया। विदेशों में भारतीय संस्कृति को प्रचारित प्रसारित करने में जो स्थान महात्मा बुद्ध, स्वामी विवेकानन्द, स्वामी रामतीर्थ आदि महापुरूषों को प्राप्त है, ठीक वही स्थान भारतीय संगीत के प्रचार प्रसार में पंडित रवि शंकर को प्राप्त है। प्रोफेसर हरिश चन्द्र श्रीवास्तव के कथनानुसार, 'आप ऐसे रवि हैं, जिन्होंने शास्त्रीय संगीत की किरणों को विदेशों में पहुँचाकर भारत का मस्तक ऊँचा किया है।'

अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति लब्ध कलाकार पंडित रवि शंकर का जन्म 7 अप्रैल सन 1920 को वाराणसी में डॉ० श्याम शंकर के घर चतुर्थ पुत्र के रूप में हुआ। डॉ० श्याम शंकर अपने समय के जाने माने विद्वान, इग्लैण्ड से बार-एट-लॉ अर्थात बैरिस्टर और जनेवा विश्वविद्यालय के राजनीति शास्त्र में डाक्टरेट थे। आप कुछ समय तक कैलिफोंनिया विश्वविद्यालय में दर्शन शास्त्र के प्राध्यापक भी रहे।

आपकी माता का नाम श्रीमती हेमांगिनी देवी था। बचपन से ही पंडित रवि शंकर पर अपने बड़े भाई पंडित उदय शंकर, जो प्रसिद्ध नृत्यकार थे, का बहुत प्रभाव पड़ा। जिसके कारण आपकी प्रारम्भिक संगीत शिक्षा नृत्य में शुरू हुई। 10 वर्ष की बाल्यावस्था से ही आपने अपने बड़े भाई पंडित उदय शंकर की नृत्य मण्डली के साथ विदेशों का भ्रमण किया और अनेक प्रस्तुतियां दी। इसी समय सन 1935 में आपका परिचय उस्ताद अल्लाउद्दीन खां से हुआ, जो आपकी नैसर्गिक प्रतिभा से बहुत ही प्रभावित हुए। उन्होंने कभी कभी आपको गाने व सितार की शिक्षा देनी प्रारम्भ की। उस्ताद अल्लाउद्दीन खां ने आपको नृत्य छोड़ सितार सीखने की सलाह दी, किन्तु उस समय नृत्य में पारंगत होने के कारण आपको उनकी सलाह ठीक नहीं लगी। किन्तु कुछ वर्षों बाद नृत्य में रूचि कम होने के कारण आपने सन 1938 में नृत्य बन्द कर उस्ताद अल्लाउद्दीन खां से सितार की शिक्षा प्राप्त करने मैहर जा पंहुचे। अपनी सच्ची लगन, गुरू भक्ति व अथक परिश्रम से कुछ ही समय में आप उस्ताद की कृपा के पात्र बन गए। आपकी कला निष्ठा को देखते हुए उस्ताद अल्लाउद्दीन खां ने उदार हृदय से आपको पुत्रवत सितार वादन की बारिकियों की शिक्षा दी। सन 1941 में उस्ताद

अल्लाउद्दीन खां ने आपका विवाह अपनी सुपुत्री अन्नपूर्णा देवी से किया, जो सुरबहार की कुशल संगीतज्ञ थी। आप सन 1944 तक उस्ताद अल्लाउद्दीन खां से संगीत शिक्षा ग्रहण करते रहे।

सन 1945 में आपने एक नृत्य मण्डली के नृत्यों का संगीत निर्देशन किया, जिसे लोगों ने बहुत पसंद किया। इस सफलता के बाद जल्दी ही आपको इण्डियन नेशनल थियेटर द्वारा निर्मित 'डिस्कवरी ऑफ इण्डिया के संगीत निर्देशन का कार्यभार सौंपा गया। इसके निर्देशन में आपको भारी सफलता मिली एवं आपको एक सफल निर्देशक के रूप में ख्याति प्राप्त हुई। इसके कुछ समय बाद आप आकाशवाणी के दिल्ली केन्द्र द्वारा वाद्यवृन्द के निर्देशन के लिए निमन्त्रित किये गये। इस प्रस्ताव को आपने सहर्ष स्वीकार किया।

सन 1956 में आपने आकाशवाणी की नौकरी छोड़ विदेशों में भारतीय संस्कृति के प्रचार प्रसार हेतु अपने साथ एक तबला वादक, श्री चतुर लाल एवं एक तानपुरा वादक को साथ लेकर विदेश यात्रा पर निकले। आपने अमेरिका, जर्मनी, इटली, हॉलैण्ड, फ्रांस, बेल्जयम, नार्वे, स्वीडन व कनाडा आदि देशों की यात्रा की और अपनी कला का प्रदर्शन किया। यही नहीं कई स्थानों पर आपने भारतीय संगीत के प्रचार हेतु निशुल्क संगीत के कार्यक्रम प्रस्तुत किये। आप अपने कार्यक्रम में वादन से पूर्व भारतीय संगीत के परिचय के संन्दर्भ में अंग्रेजी व फ्रांसिसी में स्वयं भाषण देते, यदि आवश्यकता पड़ती तो दुभाषिये से अनुवाद करवा प्रस्तुति देते। सन 1962 में आपने "किन्नर स्कुल ऑफ म्युजिक" की स्थापना की। पंडित रवि शंकर ने भारतीय वाद्यवृन्द को अपनी कला प्रतिभा से समृद्ध बनाया। आपके वाद्यवृन्द में भारतीय वाद्यों के साथ साथ विदेशी वाद्यों का भी सम्मिलित किया, किन्तु प्रधानता भारतीय वाद्यों को ही दी। ये वाद्यवृन्द शास्त्रीय, अर्धशास्त्रीय व लोक धुनों पर आधारित थे। आपके वाद्यवृन्द की रचनाओं का संग्रह "रवि शंकर के आर्केस्ट्रा" नामक पुस्तक में किया गया है। आपने अपने सम्पूर्ण जीवन की संगीत यात्रा, जीवन वृतान्त, शिक्षा, गुरु, संगीत को योगदान - का विस्तृत वर्णन अपनी आत्म कथा पुस्तक, "माई म्युजिक, माई लाईफ' अंग्रेजी भाषा में लिखी है।

पंडित रवि शंकर की सितार वादन शैली में स्वरों की शुद्धत्ता, स्वरों का लगाव व स्वरों का माधुर्य अतुलनीय है। आपके वादन शैली गायकी अंग व आलाप जोड़ में बीन अंग की स्पष्ट झलक दिखाई देती है। सितार में 'लरज की तार जोड़ने का श्रेय भी पंडित रवि शंकर को जाता है, जिससे सितार पर वीणा वादन के प्रत्येक अंग का वादन सम्भव हुआ। आपने

दक्षिणी संगीत कई रागों को हिन्दोस्तानी शास्त्रीय संगीत में प्रचारित कर लोकप्रिय बनाया, जिनमें हंसध्वनि, जनसम्मोहिनी, चारूकेशी इत्यादि प्रमुख है। इसके साथ ही आपने कई नवीन राग भी संगीत जगत को दिये, जिनमें मोहन कॉस, तिलक श्याम, बैरागी, रंगेश्वरी, परमेश्वरी, कामेश्वरी इत्यादि प्रमुख हैं।

पंडित रवि शंकर को सन 1962 में 'संगीत नाटक अकादमी पुरस्कार, सन 1975 में 'संगीत नाटक अकादमी फैलोशिप', सन 1977 में भारत सरकार द्वारा 'पदम् भूषण', सन 1991 में भारत सरकार द्वारा 'पदम् विभूषण' तथा सन 1999 में देश का सर्वोच्च अलंकरण 'भारत रत्न' से सम्मानित किया गया। इसके अतिरिक्त सन 1986 में आप भारत सरकार द्वारा राज्य सभा के लिए नामित हुए, अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर संगीत जगत का सर्वोच्च सम्मान 'ग्रेमी अवार्ड' तथा सन 1992 में 'रोमन मेगासयस अवार्ड व विश्व के 14 विश्वविद्यालयों ने आपको मानद डॉक्टरेट की उपाधियों से सम्मानित किया है। विदेशों में आपकी सुपुत्री अनुष्का शंकर एक श्रेष्ठ सितार वादक के रूप में पहचान बना चुकी है, आपके विषयों में उमा शंकर मिश्र, जया बोस, कार्तिक कुमार, शंकर घोष, विनय कुमार अग्रवाल इत्यादि के नाम प्रमुख हैं।

12 दिसम्बर सन 2012 में संगीत का यह 'रवि' सदा सदा के लिए अस्त हो गया

स्वयं मूल्यांकन प्रश्न 1

3.6 पंडित रविशंकर का जन्म कब हुआ?

1 7 मई सन 1921

2 7 अप्रैल सन 1920

3 7 अप्रैल सन 1923

4 7 जून सन 1929

3.7 पंडित रवि शंकर ने संगीत शिक्षा किनसे ग्रहण की?

1 पंडित निखिल बैनर्जी

2 स्वामी हरीदास

3 बाबा अल्लाउद्दीन खाँ

4 इनमे से कोई

3.8 पंडित रवि शंकर को भारत रत्न पुरस्कार कब प्राप्त हुआ?

1 1999

2 1997

3 1998

4 2000

3.9 पंडित रविशंकर की बेटी का क्या नाम है?

1 राधिका शंकर

2 अनुष्का शंकर

3 प्रेरणा शंकर

4 कोई नहीं

3.10 पंडित रविशंकर का देहांत कब हुआ?

1 12 दिसम्बर सन 2012

2 7 अप्रैल सन 2011

3 7 अप्रैल सन 2000

4 7 जून सन 2002

3.5 सारांश

पं० विष्णु नारायण भातखण्डे और पं. रवि शंकर भारतीय शास्त्रीय संगीत का एक महत्वपूर्ण विषय है, जिसके बिना अच्छे संगीत की कल्पना भी नहीं की जा सकती। इनके जीवन परिचय के अध्ययन से इनके द्वारा रचित रचनाओं और कृतियों को समझने और जानने का अवसर मिलता है, जो किसी भी संगीत रसिक के सांगीतिक जीवन के लिए सोने पर सुहागे वाली बात हो जाती है। इनके जीवन परिचय के अध्ययन से शास्त्रीय संगीत के क्रियात्मक और रचनात्मक पक्ष मे मजबूती, तैयारी और परिपक्क्वता आती है, जो श्रोताओं को अनायास ही मंत्रमुग्ध करती हैं। शास्त्रीय संगीत मे संगीतज्ञ के गायन वादन और सांगीतिक सफर मे प्रेरणा, रंजकता और परिपक्क्वता आती है।

3.6 शब्दावली

- अलंकार (Alankar): जिस प्रकार एक स्त्री सुन्दर दिखने के लिए आभूषणों से खुद को सजाती है वही स्थान संगीत मे अलंकार का है।
- राग (Raga): संगीत का एक विशेष संरचनात्मक पद्धति, जो स्वरों के विशेष क्रम का उपयोग करके भावनात्मक और मनोरंजन को व्यक्त करता है।
- ताल (Taal): संगीत में अंकित समय स्तर को ताल कहा जाता है, जो गायन या वादन के साथ समय की गणना करने में मदद करता है।
- लय (Lay): संगीत में गति या चलन को लय कहा जाता है, जो ताल की गति को निर्दिष्ट करता है।
- रागिनी (Ragini): रागों की सहायक संगीत पद्धति जिसमें संगीत रागों के विभिन्न अनुभवों और भावों को व्यक्त करने के लिए मेलोडी और ताल का उपयोग किया जाता है।
- श्रुति (Shruti): संगीत में सबसे छोटे स्वर को श्रुति कहा जाता है, जो स्वर स्थान पर किसी भी विस्तार में पाया जा सकता है।
- स्वर (Swar): संगीत में विभिन्न ऊर्जाओं को स्थान देने वाले तारों को स्वर कहा जाता है, जो संगीत के मूल भाग हैं।
- मेलोडी (Melody): संगीत में स्वरों के विशेष क्रम का एक संरचित और आकर्षक संयोजन, जिससे एक गाना या संगीत कविता का निर्माण होता है।
- अलंकार (Alankaar): संगीत में आकर्षकता और सौंदर्य को बढ़ाने के लिए स्वरों या ताल के विशेष प्रयोग को अलंकार कहा जाता है।
- सितार (Sitar): सितार हिन्दुस्तानी शास्त्रीय संगीत का ऐसा वाद्य यंत्र है जिसे अपने अथक प्रयासों से पंडित रविशंकर जी ने हिंदुस्तान ही नहीं बल्कि समस्त जगत मे एक अलग पहचान दिलाई।

3.7 स्वयं जांच अभ्यास प्रश्नों के उत्तर

आत्म-मूल्यांकन प्रश्न 1

3.1 उत्तर: 3

3.2 उत्तर: 1

3.3 उत्तर: 2

3.4 उत्तर: 2

3.5 उत्तर: 2

आत्म-मूल्यांकन प्रश्न 2

3.6 उत्तर: 2

3.7 उत्तर: 3

3.8 उत्तर: 1

3.9 उत्तर: 2

3.10 उत्तर: 1

3.8 संदर्भ

भातखंडे, विष्णुनारायण. (1970). कर्मिक पुस्तक मलिका. खंड 1-6, संगीत कार्यालय हाथरस।

श्रीवास्तव, हरिश्चद्र. (2015). राग परिचय (भाग 1), संगीत सदन प्रकाशन, इलाहबाद।

मृत्युंजय, डॉ. शर्मा. (2000). संगीत मैनुअल. ए.जी. पब्लिकेशन, दिल्ली।

श्रीवास्तव, हरिश्चद्र. (2010). राग परिचय (भाग 4), संगीत सदन प्रकाशन, इलाहबाद।

प्रो. केशव शर्मा द्वारा साक्षात्कार से प्राप्त जानकारी।

डॉ. मृत्युंजय शर्मा द्वारा साक्षात्कार से प्राप्त जानकारी।

डॉ. निर्मल सिंह द्वारा साक्षात्कार से प्राप्त जानकारी।

3.9 अनुशंसित पठन

श्रीवास्तव, हरिश्चद्र. (2015). राग परिचय (भाग 2), संगीत सदन प्रकाशन, इलाहबाद।

श्रीवास्तव, हरिश्चद्र. (1998). मधुर स्वरलिपि संग्रह. संगीत सदन प्रकाशन, इलाहबाद।

3.10 पाठगत प्रश्न

प्रश्न 1. पं० विष्णु नारायण भातखण्डे का संक्षिप्त परिचय लिखिए।

प्रश्न 2. पं० विष्णु नारायण भातखण्डे का संक्षिप्त जीवन परिचय और इनके सांगीतिक योगदान पर विस्तृत वर्णन कीजिए।

प्रश्न 3. पं० विष्णु नारायण भातखण्डे का जीवन परिचय और इनकी सांगीतिक उपलब्धियों पर विस्तृत प्रकाश डालें।

प्रश्न 4. पं० विष्णु नारायण भातखण्डे द्वारा रचित रचनाओं का विस्तार सहित वर्णन करें।

पंडित जयदेव

प्रश्न 1. पं० रविशंकर का संक्षिप्त परिचय लिखिए।

प्रश्न 2. पं० रविशंकर का संक्षिप्त जीवन परिचय और इनके सांगीतिक योगदान पर विस्तृत वर्णन कीजिए।

प्रश्न 3 पं० रविशंकर का जीवन परिचय और इनकी सांगीतिक उपलब्धियों पर विस्तृत प्रकाश डालें।

प्रश्न 4 पं० रविशंकर द्वारा रचित रचनाओं एवं कृतियों का विस्तार सहित वर्णन करें।

इकाई -4
एकताल और झप ताल

इकाई की रूपरेखा

4.1	भूमिका
4.2	उद्देश्य
4.3	एकताल परिचय
	स्वयं जांच अभ्यास 1
4.4	झपताल के उदाहरण
	स्वयं जांच अभ्यास 2
4.5	सारांश
4.6	शब्दावली
4.7	स्वयं जांच अभ्यास प्रश्नों के उत्तर
4.8	संदर्भ
4.9	अनुशंसित पठन
4.10	पाठगत प्रश्न

4.1 भूमिका

संगीत (गायन तथा वादन) में, स्नातक के क्रियात्मक पाठ्यक्रम MUSA103 की यह चौथी इकाई है। इस इकाई में संगीत, विशेष रूप से गायन और सितार वाद्य के संदर्भ में, एकताल और झप ताल का अर्थ परिचय और विस्तृत अध्ययन किया गया है।

उत्तर भारतीय शास्त्रीय संगीत में रागों का प्रस्तुतिकरण विशेष रूप से होता है, जो सुनने में मधुरता से युक्त, कर्णप्रिय, वैचित्रतापूर्ण तथा आनंददायक होता है। लेकिन राग के साथ अगर ताल न हो तो ऐसे संगीत की तो हम कल्पना भी नहीं कर सकते। आज के समय में शास्त्रीय संगीत के कलाकार रागों को अपने मंच प्रदर्शन के समय प्रस्तुत करते हैं तो उन्हें राग के साथ ताल का भी उतना ही ज्ञान होना चाहिए जितना कि राग का । गायन या वादन का अभ्यास अगर ताल के साथ किया जाए तो ताल मे पकड़ तो आती ही है, साथ ही प्रस्तुति मे भी चार चाँद लग जाते हैं।

इस इकाई के अध्ययन के पश्चात् विद्यार्थी एकताल और झप ताल अर्थ परिभाषा और ताल की एकगुण, दुगुण और तीनगुण के बारे मे विस्तार से अध्ययन कर पाएंगे तथा साथ ही सितार वादन पर ताल के साथ अभ्यास से अपने वादन मे मधुरता परिपक्क्वता ला सकेंगे। विद्यार्थी इस विषय के अध्ययन के पश्चात स्वयं ताल को समझने और ताल के साथ न्याय करने में समर्थ हो सकेंगे।

4.2 उद्देश्य

इस इकाई का अध्ययन करने के पश्चात् विद्यार्थी

- एकताल का अर्थ समझ सकेंगे।
- विभाग, सम, ताली और खाली का अर्थ समझ सकेंगे।
- एकताल की दुगुण समझ पाएंगे।
- एकताल की तिगुण समझ पाएंगे।
- एकताल की चौगुण समझ पाएंगे।

- झपताल का अर्थ समझ सकेंगे।
- झपताल की दुगुण समझ पाएंगे।
- झपताल की तिगुण समझ पाएंगे।
- झपताल की चौगुण समझ पाएंगे।
- झपताल के अभ्यास से किसी भी रचना को अच्छे से निभा सकेंगे।
- चौताल के अभ्यास से किसी भी रचना को अच्छे से निभा सकेंगे।

इन उद्देश्यों के माध्यम से, विद्यार्थी न केवल एकताल और झप ताल के तकनीकी पहलुओं को जान पाएंगे, बल्कि इसके गहरे सांगीतिक, सांस्कृतिक और भावनात्मक महत्व को भी समझ सकेंगे। इससे उनके संगीत के प्रति दृष्टिकोण में गहराई और समृद्धि आएगी, साथ ही मंच प्रदर्शन मे परिपक्क्वता का अनुभव भी प्राप्त होगा, जो कि उनके भविष्य में सहायक सिद्ध होगा।

4.3 एक ताल परिचय

ताल नाम- एक ताल

मात्राएं- बारह मात्राएं

वाद्य यंत्र- तबला वाद्य यंत्र का ताल

खाली- दो खाली (तीसरी और सातवीं मात्राओं पर)

विभाग- दो-दो मात्राओं के छः मात्र विभाग

ताली- पहली मात्रा पर सम तथा पाँचवीं, नौवीं और ग्यारहवीं मात्राओं पर क्रमशः पहली दूसरी और तीसरी ताली

खास विशेषता- इस ताल का प्रयोग भारतीय शास्त्रीय गायन एवं वादन के साथ किया जाता है।

एक ताल ठाह लय (एकगुण)

मात्राएं	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12

बोल	धिं धिं	धागे तिरकिट	तू ना	क त्ता	धागे तिरकिट	धिं ना
चिन्ह	**x**	**0**	**2**	**0**	**3**	**4**

एक ताल (दुगुण)

मात्राएं	**1 2**	**3 4**	**5 6**	**7 8**	**9 10**	**11 12**
बोल	धिंधिं धागेतिरकिट	तूना कत्ता	धागेतिरकिट धिंना	धिंधिं धागेतिरकिट	तूना कत्ता	धागेतिरकिट धिंना
चिन्ह	**x**	**0**	**2**	**0**	**3**	**4**

तीन ताल (तिगुण)

मात्राएं	**1 2**	**3 4**	**5 6**	**7 8**	**9 10**	**11 12**
बोल	धिंधिंधागे तिरकिट तूना	कत्ताधागे तिरकिटधिं ना	धिंधिंधागे तिरकिट तूना	कत्ताधागे तिरकिटधिं ना	धिंधिंधागे तिरकिट तूना	कत्ताधागे तिरकिटधिं ना
चिन्ह	**x**	**0**	**2**	**0**	**3**	**4**

एक ताल (चौगुण)

मात्राएं	**1 2**	**3 4**	**5 6**	**7 8**	**9 10**	**11 12**
बोल	धिंधिं धागेतिरकिट तूना कत्ता	धागेतिरकिट धिंना धिंधिं धागेतिरकिट	तूना कत्ता धागेतिरकिट धिंना	धिंधिं धागेतिरकिट तूना कत्ता	धागेतिरकिट धिंना धिंधिं धागेतिरकिट	तूना कत्ता धागेतिरकिट धिंना
चिन्ह	**x**	**0**	**2**	**0**	**3**	**4**

स्वयं मूल्यांकन प्रश्न

4.1 एक ताल मे कितनी मात्राएं होती हैं?

1) 13

2) 14

3) 10

4) 12

4.2 एक ताल मे कितने मात्रा विभाग होते हैं?

1) 5

2) 8

3) 6

4) 12

4.3 एक ताल मे कौन सी मात्रा पर सम है ?

1) 5

2) 8

3) 1

4) 12

4.4 एक ताल में सम के अलावा कितनी ताली होती हैं?

1) 5

2) 3

3) 5

4) 12

4.5 एक ताल मे कितनी खाली होती हैं?

1) 5

2) 3

3) 5

4) 2

4.4 ताल रुपक परिचय

ताल नाम- झप ताल

मात्राएं- दस मात्राएं

वाद्य यंत्र- तबला वाद्य यंत्र का ताल

खाली- एक खाली (छठी मात्रा मात्रा पर)

विभाग- दो-तीन, दो-तीन मात्राओं के चार मात्रा विभाग

ताली- पहली मात्रा पर सम तथा तीसरी और आठवीं मात्राओं पर क्रमशः पहली और दूसरी ताली

खास विशेषता- इस ताल का प्रयोग भारतीय शास्त्रीय संगीत मे ख्याल गायन विधा के साथ बहुतायत किया जाता है।

झप ताल ठाह लय (एकगुण)

मात्राएं	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10
बोल	धी	ना	धी	धी	ना	ती	ना	धी	धी	ना
चिन्ह	x		2			0		3		

झप ताल (दुगुण)

मात्राएं	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10
बोल	धीना	धीधी	नाती	नाधी	धीना	धीना	धीधी	नाती	नाधी	धीना
चिन्ह	x		2			0		3		

झप ताल (तिगुण)

मात्राएं	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10
बोल	धीनाधी	धीनाती	नाधीधी	नाधीना	धीधीना	तीनाधी	धीनाधी	नाधीधी	नातीना	धीधीना
चिन्ह	x		2			0		3		

झप ताल (चौगुण)

मात्राएं	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10
बोल	धीनाधीधी	नातीनाधी	धीनाधीना	धीधीनाती	नाधीधीना	धीनाधीधी	नातीनाधी	धीनाधीना	धीधीनाती	नाधीधीना
चिन्ह	x		2			0		3		

स्वयं मूल्यांकन प्रश्न

4.6 झपताल मे कितनी मात्राएं होती हैं?

1) 13

2) 14

3) 10

4) 12

4.7 झपताल मे कितने मात्रा विभाग होते हैं?

1) 4

2) 8

3) 6

4) 12

4.8 झपताल मे कौन सी मात्रा पर सम है ?

1) 5

2) 8

3) 1

4) 12

4.9 झपताल मे सम का अलावा कितनी ताली होती हैं?

1) 5

2) 3

3) 5

4) 2

4.10 झप ताल मे कितनी खाली होती हैं?

1) 1

2) 3

3) 5

4) 2

4.5 सारांश

एकताल और झप ताल भारतीय शास्त्रीय संगीत का एक महत्वपूर्ण विषय है, जिसके बिना अच्छे संगीत की कल्पना भी नहीं की जा सकती। ताल के अभ्यास से शास्त्रीय संगीत मे तैयारी और परिपक्क्वता आती है, जो श्रोताओं को अनायास ही मंत्रमुग्ध करती हैं। शास्त्रीय संगीत मे ताल अभ्यास से संगीतज्ञ के गायन वादन मे रंजकता और परिपक्क्वता आती है। ताल मे पकड़ के साथ किसी भी मात्रा से तान या बंदिश उठाकर सम पर विचित्रता पैदा करते हुए आया जाता है।

4.6 शब्दावली

- ताल (Taal): संगीत में अंकित समय स्तर को ताल कहा जाता है, जो गायन या वादन के साथ समय की गणना करने में मदद करता है।
- लय (Lay): संगीत के समान गति को लय कहते हैं, संगीत में लय अत्यंत महत्पूर्ण हैं, लय के बिना संगीत की कल्पना भी करना असंभव हैं।
- मात्रा (Matra): ताल की इकाई को मात्रा कहते हैं।
- ताली (Taali): सम के अलावा अन्य विभागों की पहली मात्रा पर जहाँ हथेली पर दुसरे हाथ की हथेली के आघात द्वारा ध्वनि उत्पन्न की जाती है, उसे ताली कहते हैं।
- खाली (Khali): ताल देते समय जहाँ विभाग की प्रथम मात्र पर ध्वनि न करके केवल हाथ हिलाकर इशारा कर देते हैं, उसे 'खाली' कहते हैं. अधिकतर खाली ताल के बीच की मात्र अथवा उसके आस पास हीं कहीं पड़ती है।
- विभाग (Vibhag): ताल को कुछ निश्चित मात्राओं में बांटना जिससे भरे एवं खाली जगहों का पता लगे उसे विभाग कहते हैं

4.7 स्वयं जांच अभ्यास प्रश्नों के उत्तर

4.1 उत्तर: 4

4.2 उत्तर: 3

4.3 उत्तर: 1

4.4 उत्तर: 2

4.5 उत्तर: 4

आत्म-मूल्यांकन प्रश्न 2

4.6 उत्तर: 3

4.7 उत्तर: 1

4.8 उत्तर: 3

4.9 उत्तर: 2

4.10 उत्तर: 1

4.8 संदर्भ

भातखंडे, विष्णुनारायण. (1970). कर्मिक पुस्तक मलिका. खंड 1-6, संगीत कार्यालय हाथरस।

श्रीवास्तव, हरिश्चद्र. (2015). राग परिचय (भाग 1), संगीत सदन प्रकाशन, इलाहबाद।

मृत्युंजय, डॉ. शर्मा. (2002). संगीत मैनुअल. ए.जी. पब्लिकेशन, दिल्ली।

श्रीवास्तव, हरिश्चद्र. (2010). राग परिचय (भाग 4), संगीत सदन प्रकाशन, इलाहबाद।

प्रो. केशव शर्मा द्वारा साक्षात्कार से प्राप्त जानकारी।

डॉ. मृत्युंजय शर्मा द्वारा साक्षात्कार से प्राप्त जानकारी।

डॉ. निर्मल सिंह द्वारा साक्षात्कार से प्राप्त जानकारी।

4.9 अनुशंसित पठन

श्रीवास्तव, हरिश्चद्र. (2015). राग परिचय (भाग 2), संगीत सदन प्रकाशन, इलाहबाद।

श्रीवास्तव, हरिश्चद्र. (1998). मधुर स्वरलिपि संग्रह. संगीत सदन प्रकाशन, इलाहबाद।

4.10 पाठगत प्रश्न

प्रश्न 1. एकताल का परिचय एवं एकगुण लिखिए।

प्रश्न 2 झपताल का परिचय एवं एकगुण लिखिए।

प्रश्न 3 एकताल और झप ताल का परिचय एवं एकगुण लिखिए।

प्रश्न 4. एकताल का परिचय एवं एकगुण और दुगुण लिखिए।

प्रश्न 5. झप ताल का परिचय एवं एकगुण और दुगुण लिखिए।

प्रश्न 6. एकताल और झप ताल का परिचय एवं एकगुण और दुगुण लिखिए।

प्रश्न 7. एकताल और झप ताल का परिचय एवं एकताल की एकगुण और दुगुण लिखिए।

प्रश्न 8. एकताल और झप ताल का परिचय एवं झप ताल की एकगुण और दुगुण लिखिए।

प्रश्न 9. एकताल और झप ताल का परिचय एवं एकताल की एकगुण और तिगुण लिखिए।

प्रश्न 10. एकताल और झप ताल का परिचय एवं झप ताल की एकगुण और तिगुण लिखिए।

इकाई -5
आश्रय राग और गमक

इकाई की रूपरेखा

5.1	भूमिका
5.2	उद्देश्य
5.3	आश्रय राग परिचय
	स्वयं जांच अभ्यास 1
5.4	गमक परिचय
	स्वयं जांच अभ्यास 2
5.5	सारांश
5.6	शब्दावली
5.7	स्वयं जांच अभ्यास प्रश्नों के उत्तर
5.8	संदर्भ
5.9	अनुशंसित पठन
5.10	पाठगत प्रश्न

5.1 भूमिका

संगीत (गायन तथा वादन) में, स्नातक के क्रियात्मक पाठ्यक्रम MUSA103 की यह पाँचवीं इकाई है। इस इकाई में संगीत, विशेष रूप से गायन और सितार वाद्य के संदर्भ में, आश्रय राग और गमक का अर्थ परिचय और विस्तृत अध्ययन किया गया है।

उत्तर भारतीय शास्त्रीय संगीत में रागों का प्रस्तुतिकरण विशेष रूप से होता है, जो सुनने में मधुरता से युक्त, कर्णप्रिय, वैचित्रतापूर्ण तथा आनंददायक होता है। आज के समय में शास्त्रीय संगीत के कलाकार रागों को अपने मंच प्रदर्शन के समय प्रस्तुत करते हैं। रागों में मधुरता और वैचित्र्य लाने के लिए गमक का अभ्यास किया जाता है। गमक के अभ्यास से गायक की आवाज मे परिपक्क्वता और वादक के वादन मे मधुरता, गांभीर्य और तैयारी साफ झलकती है।

इस इकाई के अध्ययन के पश्चात् विद्यार्थी आश्रय राग और गमक विषय का अर्थ परिभाषा और गमक के प्रकार और रूपों के बारे मे विस्तार से अध्ययन कर पाएंगे तथा साथ ही सितार वादन पर गमक के अभ्यास से अपने वादन मे मधुरता ला सकेंगे। आश्रय राग के अध्ययन से विद्यार्थी रागों के बीच के अंतर को समझ पाएगा।

5.2 उद्देश्य

इस इकाई का अध्ययन करने के पश्चात् विद्यार्थी

- आश्रय राग विषय का अर्थ समझ सकेंगे।
- आश्रय राग के विभिन्न प्रकारों को समझ सकेंगे।
- गमक विषय का अर्थ समझ सकेंगे।
- गमक के विभिन्न प्रकारों को विस्तार से समझ सकेंगे।
- सितार वाद्य पर गमक का अभ्यास कर पाएंगे, जिससे उनके वादन मे निखार आएगा।

इन उद्देश्यों के माध्यम से, विद्यार्थी न केवल आश्रय राग और गमक के तकनीकी पहलुओं को जान पाएंगे, बल्कि इसके गहरे सांगीतिक, सांस्कृतिक और भावनात्मक महत्व को भी समझ सकेंगे। इससे उनके संगीत के प्रति दृष्टिकोण में गहराई और समृद्धि आएगी, साथ ही मंच प्रदर्शन मे परिपक्क्वता का अनुभव भी प्राप्त होगा, जो कि उनके भविष्य में सहायक सिद्ध होगा।

5.3 आश्रय राग परिचय

भारतीय संगीत में समय-समय पर रागों के वर्गीकरण की अनेक पद्धतियां प्रचलित रही हैं। जिनमें ग्राम-राग वर्गीकरण, राग-रागिनी वर्गीकरण, थाट-राग वर्गीकरण व रागांग-राग वर्गीकरण। इन सभी वर्गीकरणों में आज के समय थाट-राग वर्गीकरण सवार्धिक प्रचलित है। इस थाट राग वर्गीकरण को प्रतिपादित करने का श्रेय पं. विष्णु नारायण भातखण्डे को है जिन्होंने समस्त रागों को उनमें लगने वाले शुद्ध-विकृत स्वरों के आधार पर 10 थाट राग वर्गीकरण की व्यवस्था को स्वरूप दिया। जिनमें प्रत्येक थाट के स्वर एक दूसरे से पृथक-पृथक थे। प्रत्येक थाट का नामकरण उससे उत्पन्न प्रसिद्ध राग के नाम पर रखा गया। अतः ऐसे राग जिनके आधार पर थाट का नाम रखा गया उन्हें आश्रय राग कहा गया। दूसरे शब्दों में जिस राग के नाम पर थाट का नामकरण किया गया, उसे उस थाट का आश्रय राग कहा गया।

पं. भातखण्डे ने यह नामकरण की व्यवस्था इसलिए दी क्योंकि थाट गेय नहीं है अर्थात् उन्हें गाया-बजाया नहीं जाता। थाट का नामकरण अपने आप में स्वतन्त्र व्यवस्था नहीं है। अतः पं. भातखण्डे ने थाट को जनक एवं राग को जन्य कह कर प्रत्येक थाट का नामकरण उससे उत्पन्न प्रसिद्ध राग के नाम पर रखा गया यथा- बिलावल, यमन, खमाज, काफी, भैरव, भैरवी, आसावरी, पूर्वी, तोड़ी, मारवा। थाटों की संख्या दस होने के कारण कुल आश्रय रागों की संख्या भी दस है।

आश्रय राग की प्रमुख विशेषता यह है कि उस थाट से निकले जितने भी राग होते हैं उन सब में आश्रय राग की कुछ न कुछ छाया अवश्य आती है जैसे भैरव थाट का आश्रय राग भैरव है, जिसकी छाया उससे उत्पन्न अन्य प्रकारों में यथा - रामकली, गुणकली, अहीर भैरव, बैरागी भैरव इत्यादि सभी में कुछ न कुछ अवश्य रहती है।

परिभाषा :

ऐसे राग जिनके आधार पर थाट का नाम रखा गया उन्हें आश्रय राग कहा गया।

स्वयं मूल्यांकन प्रश्न

5.1 कुल आश्रय राग कितने हैं?

1) 20

2) 22

3) 09

4) 10

5) कोई नहीं।

5.2 राग आसावरी का आश्रय थाट हैं?

1) यमन

2) बिलावल

3) आसावरी

4) पूर्वी

5) कोई नहीं।

5.3 राग यमन/कल्याण का आश्रय थाट हैं?

1) कल्याण

2) बिलावल

3) आसावरी

4) पूर्वी

5) कोई नहीं।

5.4 राग अहीर भैरव का आश्रय थाट हैं?

1) कल्याण

2) बिलावल

3) आसावरी

4) पूर्वी

5) कोई नहीं।

5.5) इनमे से कौन सा आश्रय राग नहीं हैं?

1) वृंदावनी सारंग

2) बिलावल

3) आसावरी

4) पूर्वी

5) कोई नहीं।

5.4 गमक

गमक का अर्थ है चलना। 'गमक को भारतीय संगीत में प्राचीन समय से ही महत्व दिया जाता रहा है। प्राचीन विद्वानों के अनुसार गमक के कारण ही संगीत में रंजकता उत्पन्न होती है। गमक की परिभाषा इस प्रकार कही गई है कि जब स्वर को विशिष्ट प्रकार से हिलाते है तो उसे गमक कहते है।

संगीत रत्नाकर के अनुसार-

स्वरस्य कंपो गमकः श्रोत्रचित्तं सुखावहः।

अर्थात गमक एक विशेष प्रकार के स्वरों के कंपन को कहते हैं, जिसके प्रयोग से श्रोताओं के मन मे सुख उत्पन्न होता है। आधुनिक समय में गमक शब्द का प्रयोग विशेष प्रकार के स्वर के आंदोलन से किया जाता है। जबकि पहले समय में गमक का अर्थ स्वरों के विभिन्न प्रकार के कंपन से लिया जाता था। आधुनिक समय में हृदय से साँस के द्वारा विशेष प्रकार के कंपन पैदा कर जब स्वरों का उच्चारण करते है तो उसे गमक कहते है। दो स्वरों से उत्पन्न हुई कंपन से युक्त ध्वनि को गमक कहा जाता है, निम्नस्वर से उच्च स्वर तक मींड युक्त अखंड गति से जाते समय जो कंपन युक्त ध्वनि उत्पन्न होती है, उस विशेष ध्वनि को गमक कहा जाता है। यह गमक की आधुनिक समय की परिभाषा है।

प्राचीन समय में गमक के कई प्रकार (भेद) माने गये थे, संगीत परिजात के अनुसार गमक के 20 भेद है।

(1) चयवित

(2) कंपति

(3) प्रत्याहत

(4) द्विराहत

(5) स्फुटित

(6) अनाहत

(7) शांत

(8) तिरिप

(9) घर्षण

(10) अवघर्षण

(11) तिकर्षण

(12) स्वरस्थान

(13) अवग्रह

(14) कर्त्तरी

(15) पुनः स्वरस्थान

(16) स्फुट

(17) शनैमच्य

(18) सुढालू

(19) हम्फित

(10) घर्षण

(20) म्रूदा

संगीत रत्नाकर के अनुसार गमक 15 प्रकार के है

(1) तिरिप

(2) स्फुरित

(3) कंपित

(4) लीन

(5) आंदोलित

(6) वलित

(7) त्रिभिन्न

(8) कुरुला

(9) आहत

(10) उल्लासित

(11) प्लावित

(12) हुंफित

(13) मुद्रित

(14) नामित

(15) मिश्रित

दक्षिणी संगीत के ग्रंथों में गमक के 10 भेद् दिए गए है

(1) आरोह

(2) अवरोह

(3) ढालु

(4) स्फुरित

(5) कंपित

(6) आहत

(7) प्रत्याहत

(8) त्रिपुच्छ

(9) आंदोलित

(10) मूर्छना

यहाँ हम संगीत रत्नाकर में दिए गए गमकों का वर्णन- -

(1) कंपित- मूल स्वर के आगे वाले या पीछे वाले स्वर स्वर की सहायता से, मूल स्वर को शीघ्रता से स्पर्श करते युक्त हुए, मूल स्वर का कंपन द्वारा उच्चारण कंपित गमक कहा कहलाता है। आधुनिक समय में इसे खटका कहते हैं।

(2) स्फुरित- जब कंपित स्वर का बार-बार शीघ्रता से उच्चारण करते समय मूल स्वर का स्पष्ट रूप से प्रयोग किया जाता है तो उसे स्फुरित गमक कहते हैं। आज इसे गिटकरी कहा जाता है।

(3) आहत- जब अवरोह में पास के स्वर को हल्के से स्पर्श कर, मूल स्वर पर आते हैं तो वह आहत गमक

होता है। आज इसे कण स्वर के रूप में जाना जाता है।

(4) आंदोलित- स्वर को उसके पहले के तथा बाद के स्वर के स्पर्श सहित उच्चारित किया जाना ही आंदो बाद गमक है। आज आंदोलित स्वर भारतीय संगीत की विशेषता है।

(5) प्लावित- एक स्वर से दूसरे स्वर तक अखंड रूप से उच्चारण करना ही प्लावित गमक है, आज इसे मौंड के नाम से जाना जाता है।

(6) उल्लासित - इस गमक में हर स्वर अपने से पहले के स्वर को इस प्रकार छूता है कि ऐसा लगता है जैसे वह स्वर हिल रहा हो। इस गमक के द्वारा भाव की अभिव्यक्ति होती है। इसमें स्वर क्रम से हिलते हैं।

(7) त्रिभिन्न- तीनों सप्तकों में एक जैसे स्वरों को गाना बजाना त्रिभिन्न गमक कहलाता है। आधुनिक समय में इसे पुकार कहते हैं।

(8) तिरिप- इसमें स्वरों का प्रयोग तीव्र गति से किया जाता है।

(१) वलित- इस गमक के अंतर्गत चार स्वरों को बार-बार शीघ्रता से इस प्रकार बजाते हैं कि उसका चक्र सा बन जाए।

(10) हुंफित- जब हृदय से जोर लगाकर स्वर का उच्चारण किया जाता है तो वह हुंफित गमक कहलाता है। आधुनिक काल में ध्रुपद गायकी के साथ इसका प्रयोग अधिक होता है।

(11) लीन- स्वर पर अधिक समय तक ठहराव ही लीन गमक है।

(12) मुद्रित- इस गमक में स्वरों का कंपन मुंह बंद करके किया जाता है।

(13) कुरुला- गले को संकुचित करके गांना ही कुरुला गमक है।

(14) नामित - स्वरों में कंपन जब कोमलता से किया जाता है तो वह नामित गमक होता है।

(15) मिश्रित - इस गमक में दो या दो से अधिक इस गमकों का प्रयोग एक साथ किया जाता है।

दक्षिणी संगीत में गमक अपने नामों से ही प्रयोग किए ये जाते हैं। परन्तु उत्तरी संगीत में इन गमकों के नाम अलग हैं। उत्तरी संगीत में इन्हें कण, मींड आदि के नाम से जाना जाता है। वास्तव में गमक श्रुतियों के प्रयोग से ही बनते हैं। जैसे भैरव राग में जब तक ऋषभ को आंदोलित नहीं किया जाएगा, तब तक भैरव का रूप स्पष्ट नहीं हो पाएगा।

स्वयं मूल्यांकन प्रश्न

5.6 स्वरों का कंपन क्या कहलाता है?

1) श्रुति

2) गमक

3) पूर्ण स्वर

4) आरोह

5.7 इनमे सें कौन सा गमक है?

1) तिरिप

2) प्लुत

3) सप्तक

4) मेच कल्याणी

5.8 इनमे सें कौन सा गमक का प्रकार नहीं है?

1) तिरिप

2) आहत

3) सप्तक

4) स्फुरित

5.9 हुंफित क्या है?

1) श्रुति का नाम

2) आहत नाद

3) गमक का प्रकार

4) लीन

5.10 इनमे सें कौन सा गमक का प्रकार नहीं है?

1) कुरुला

2) अनाहत

3) मुद्रित

4) स्फुरित

5) कोई नहीं

5.5 सारांश

आश्रय राग और गमक विषय भारतीय शास्त्रीय संगीत का एक महत्वपूर्ण विषय है, जिसके बिना अच्छे संगीत की कल्पना भी नहीं की जा सकती। गमक के अभ्यास से शास्त्रीय संगीत मे तैयारी और परिपक्क्वता आती है, जो श्रोताओं को अनायास ही मंत्रमुग्ध करती हैं तथा साथ ही आश्रय राग के अध्ययन से किन्हीं भी दो या इससे अधिक रागों के बीच अंतर जानने योग्य होगा। शास्त्रीय संगीत मे गमक अभ्यास से संगीतज्ञ के गायन वादन मे रंजकता और परिपक्क्वता आती है।

5.6 शब्दावली

- राग (Raga): संगीत का एक विशेष संरचनात्मक पद्धति, जो स्वरों के विशेष क्रम का उपयोग करके भावनात्मक और मनोरंजन को व्यक्त करता है।
- ताल (Taal): संगीत में अंकित समय स्तर को ताल कहा जाता है, जो गायन या वादन के साथ समय की गणना करने में मदद करता है।
- लय (Lay): संगीत में गति या चलन को लय कहा जाता है, जो ताल की गति को निर्दिष्ट करता है।

- रागिनी (Ragini): रागों की सहायक संगीत पद्धति जिसमें संगीत रागों के विभिन्न अनुभवों और भावों को व्यक्त करने के लिए मेलोडी और ताल का उपयोग किया जाता है।
- श्रुति (Shruti): संगीत में सबसे छोटे स्वर को श्रुति कहा जाता है, जो स्वर स्थान पर किसी भी विस्तार में पाया जा सकता है।
- स्वर (Swar): संगीत में विभिन्न ऊर्जाओं को स्थान देने वाले तारों को स्वर कहा जाता है, जो संगीत के मूल भाग हैं।
- मेलोडी (Melody): संगीत में स्वरों के विशेष क्रम का एक संरचित और आकर्षक संयोजन, जिससे एक गाना या संगीत कविता का निर्माण होता है।
- अलंकार (Alankaar): संगीत में आकर्षकता और सौंदर्य को बढ़ाने के लिए स्वरों या ताल के विशेष प्रयोग को अलंकार कहा जाता है।

5.7 स्वयं जांच अभ्यास प्रश्नों के उत्तर

आत्म-मूल्यांकन प्रश्न 1

5.1 उत्तर: 4

5.2 उत्तर: 3

5.3 उत्तर: 1

5.4 उत्तर: 5

5.5 उत्तर: 1

आत्म-मूल्यांकन प्रश्न 2

5.6 उत्तर: 2

5.7 उत्तर: 1

5.8 उत्तर: 3

5.9 उत्तर: 3

5.10 उत्तर: 2

5.8 संदर्भ

भातखंडे, विष्णुनारायण. (1970). कर्मिक पुस्तक मलिका. खंड 1-6, संगीत कार्यालय हाथरस।

श्रीवास्तव, हरिश्चद्र. (2015). राग परिचय (भाग 1), संगीत सदन प्रकाशन, इलाहबाद।

मृत्युंजय, डॉ. शर्मा. (2000). संगीत मैनुअल. ए.जी. पब्लिकेशन, दिल्ली।

श्रीवास्तव, हरिश्चद्र. (2010). राग परिचय (भाग 4), संगीत सदन प्रकाशन, इलाहबाद।

प्रो. केशव शर्मा द्वारा साक्षात्कार से प्राप्त जानकारी।

डॉ. मृत्युंजय शर्मा द्वारा साक्षात्कार से प्राप्त जानकारी।

डॉ. निर्मल सिंह द्वारा साक्षात्कार से प्राप्त जानकारी।

5.9 अनुशंसित पठन

श्रीवास्तव, हरिश्चद्र. (2015). राग परिचय (भाग 2), संगीत सदन प्रकाशन, इलाहबाद।

श्रीवास्तव, हरिश्चद्र. (1998). मधुर स्वरलिपि संग्रह. संगीत सदन प्रकाशन, इलाहबाद।

5.10 पाठगत प्रश्न

प्रश्न 1. आश्रय राग विषय का परिचय लिखिए।

प्रश्न 2. आश्रय राग का अर्थ विस्तार और उदाहरण सहित लिखें।

प्रश्न 3. गमक का अर्थ विस्तार सहित लिखें।

प्रश्न 4. गमक का अर्थ और गमक के प्रकारों को विस्तार सहित लिखें।

इकाई -6
थाट और श्रुति

इकाई की रूपरेखा

6.1	भूमिका
6.2	उद्देश्य
6.3	थाट परिचय
	स्वयं जांच अभ्यास 1
6.4	श्रुति परिचय
	स्वयं जांच अभ्यास 2
6.5	सारांश
6.6	शब्दावली
6.7	स्वयं जांच अभ्यास प्रश्नों के उत्तर
6.8	संदर्भ
6.9	अनुशंसित पठन
6.10	पाठगत प्रश्न

6.1 भूमिका

संगीत (गायन तथा वादन) में, स्नातक के क्रियात्मक पाठ्यक्रम MUSA103TH की यह छठी इकाई है। इस इकाई में संगीत, विशेष रूप से गायन और सितार वाद्य के संदर्भ में, थाट और श्रुति का अर्थ परिचय और विस्तृत अध्ययन किया गया है।

उत्तर भारतीय शास्त्रीय संगीत में रागों का प्रस्तुतिकरण विशेष रूप से होता है, जो सुनने में मधुरता से युक्त, कर्णप्रिय, वैचित्रतापूर्ण तथा आनंददायक होता है। आज के समय में शास्त्रीय संगीत के कलाकार रागों को अपने मंच प्रदर्शन के समय प्रस्तुत करते हैं। रागों में मधुरता और वैचित्र्य लाने के लिए अलंकारों का अभ्यास किया जाता है। अलंकारों के अभ्यास से गायक की आवाज मे परिपक्क्वता और वादक के वादन मे मधुरता और तैयारी साफ झलकती है। अगर अलंकार किसी भी थाट मे गाए या बजाए जाएं तो कोई भी राग बहुत ही सरलता और तैयारी के साथ प्रस्तुत किया जा सकेगा। श्रुति विषय के अध्ययन से श्रुति विज्ञान को जानने मे सहायता मिलेगी और श्रुति से स्वर कैसे बने ये समझने मे भी विद्यार्थी सक्षम हो सकेगा।

इस इकाई के अध्ययन के पश्चात् विद्यार्थी थाट और श्रुति विषय का अर्थ परिभाषा और थाट और स्थाय के प्रकार और रूपों के बारे मे विस्तार से अध्ययन कर पाएंगे तथा साथ ही सितार वादन पर रागों और श्रुति अध्ययन के माध्यम से अपने वादन मे मधुरता ला सकेंगे।

6.2 उद्देश्य

इस इकाई का अध्ययन करने के पश्चात् विद्यार्थी

- थाट विषय का अर्थ समझ सकेंगे।
- थाट के विभिन्न प्रकारों को समझ सकेंगे।
- श्रुति विषय का अर्थ समझ सकेंगे।

- श्रुति के विभिन्न प्रकारों को विस्तार से समझ सकेंगे।
- सितार वाद्य पर थाट पर आधारित राग और उसके स्वरों का अभ्यास कर पाएंगे, जिससे उनके वादन मे निखार आएगा।

इन उद्देश्यों के माध्यम से, विद्यार्थी न केवल थाट और श्रुति के तकनीकी पहलुओं को जान पाएंगे, बल्कि इसके गहरे सांगीतिक, सांस्कृतिक और भावनात्मक महत्व को भी समझ सकेंगे। इससे उनके संगीत के प्रति दृष्टिकोण में गहराई और समृद्धि आएगी, साथ ही मंच प्रदर्शन मे परिपक्क्वता का अनुभव भी प्राप्त होगा, जो कि उनके भविष्य में सहायक सिद्ध होगा।

6.3 थाट परिचय

प्राचीन समय से ही रागों को वगीकृत करने की प्रथा चली आ रही है। ऐसा माना जाता है कि विभिन्न वर्गों विभाजित करने से किसी विषय को स्पष्ट ढंग से समझा जा सकता हैं। किसी कारण से रागों का भी वर्गीकरण किया गया। प्राचीन समय से ही रागों को अलग-अलग ढंग से वर्गीकृत किया गया, जैसे-जाति के आधार पर, राग-रागिनी वर्गीकरण, मेल या थाट के आधार पर। साधारण बोलचाल की भाषा में थाट का अर्थ है ढाँचा। जिस प्रकार झोंपड़ी बनाने के लिए बाँस आदि का ढाँचा तैयार करके ही मकान बनाया जाता है, उसी प्रकार तंत्री वाद्य के दंड पर बंधे परदों को किसी राग के लिए आगे-पीछे सरकाकर जो एक ढाँचा तैयार होता है उसे थाट कहा जाता है। थाट सितार वादकों द्वारा प्रयोग होने वाली एक व्यवस्था थी, जिसे उपयोगी मानकर राग वर्गीकरण के रूप में स्वीकार कर लिया गया। हिन्दुस्तानी संगीत में रागों की आवश्यकता के अनुसार कई थाटों की संख्या घटती-बढ़ती रही। परन्तु थाट पद्धति को व्यवस्थित करने का कार्य पं. भातखण्डे जी ने किया तथा गणित के आधार पर 32 थाट माने। इन 32 थाटों में से केवल 10 थाट ही लिए गए। सप्तक के 12 स्वर स्थानों मे से किन्हीं सार स्वरों के ढांचे को थाट कहते हैं। एक थाट मे जैसे स्वर लगते हैं, उसी प्रकार के स्वरों वाले राग उस थाट के अंतर्गत आते हैं। थाट के निम्न लक्षण माने गये हैं-

(1) प्रत्येक थाट में कम से कम तथा अधिक से अधिक सात स्वर ही होने चाहिए।

(2) थाट को गाया-बजाया नहीं जाता है।

(3) थाट में अवरोह नहीं होता है।

(4) थाट में एक स्वर का केवल एक ही रूप प्रयुक्त होता है। स्वर के दो रूप (कोमल तथा शुद्ध) एक साथ नहीं आते हैं।

पंडित भातखण्डे जी द्वारा थाट प्रमुख दस माने गए हैं। इनके नाम तथा स्वर निम्न प्रकार से हैं

क्रम संख्या	**थाट**	**स्वर**
1	थाट बिलावल	सभी स्वर शुद्ध
2	थाट कल्याण	म स्वर तीव्र
3	थाट खमाज	नि स्वर कोमल
4	थाट काफी	ग और नि स्वर कोमल
5	थाट मारवा	रे स्वर कोमल और म स्वर तीव्र
6	थाट भैरव	रे और ध स्वर कोमल
7	थाट भैरवी	सभी स्वर कोमल (रे ग ध नि कोमल)
8	थाट पूर्वी	रे ध स्वर कोमल और म तीव्र
9	थाट तोड़ी	रे ग ध स्वर कोमल और म तीव्र
10	थाट असावरी	ग ध नि कोमल।

स्वयं मूल्यांकन प्रश्न

6.1 दस थाट पद्धति किसकी देन है?

1) पूलुस्कर

2) पंडित भातखंडे

3) व्यंकटमखी

4) शारंग देव

6.2 थाट मे कम से कम और ज्यादा से ज्यादा कितने स्वर अनिवार्य हैं?

1) छः

2) पाँच

3) चार

4) सात 5 कोई नहीं

6.3 थाट को ..... जाता है ?

1) गाया

2) बजाया

3) 1 और 2

4) कोई नहीं

6.4 इनमे से कौन सा थाट नहीं हैं?

1) कल्याण

2) भैरव

3) रुपक

4) भैरवी

6.5 इनमे से कौन सा थाट हैं?

1) कल्याण

2) पंचम

3) रुपक

4) सिंध भैरवी

6.4 श्रुति

परिभाषाः- भारतीय संगीत का मूल आधार श्रुति को माना जाता है। श्रुति सूक्ष्मतर ध्वनि है। इसी श्रुति को पाश्चात्य संगीत में माइक्रोटोन कहा जाता है। श्रुति प्राचीन काल से शोध का विषय रहा है। अनेक विद्वानों ने समय-समय पर अपने-अपने ढंग से श्रुति की व्याख्या की है। महर्षि भरत रकृत नाट्यशास्त्र को आज संगीत का आधार ग्रंथ माना गया है। महर्षि भरत ने अपने ग्रंथ में श्रुति की व्याख्या नहीं की है अपितु सिर्फ यही कहा है कि श्रुतियाँ 22 होती है। भरत र के पश्चात अनेक विद्वानों ने श्रुति की व्याख्या अपने-2 ढंग से की है जैसे दत्तिल ने श्रुति की परिभाषा निम्न प्रकार से की है-

1 इति ध्वनि विशेषास्ते श्रवणाच्छुति संज्ञिता।

1 अर्थात श्रुतियाँ विशेष प्रकार की ध्वनि है, जो सुनी जा सकती है।

नान्यदेव के अनुसार-

श्रुतिः श्रूयत इत्येवं ध्वनिरेषोऽभिधीयते ।.

श्रुणोतेः कर्म विहिते प्रत्यये क्तिनि जाप्ते ।।

अर्थात विशेष प्रकार की ध्वनि जो सुनी जा सकती है श्रुति कहलाती है। इसमें कत् प्रत्यय लगा है। भावभट्ट के अनुसार-

स्वरूपमात्र श्रवणान्नोऽनुश्णंनं बिना ।

श्रुति रित्युच्यते भेदास्तास्या द्वाविंशतिर्मताः ।।

ने अर्थात प्रथम आघात से अनुरणन हुए बिना जो ह्रस्व नाद उत्पन्न होता है उसे श्रुति कहा जाता है। श्रुति के 22 । भेद माने गए हैं।

संगीतांजलि में श्रुति के विषय में कहा गया है कि जो स्वरों की शुद्ध और अशुद्ध अवस्था का कारण हो, जो स्वरों के ऊँचे-नीचे अंतर को मापने का मानदंड हो, जो स्पष्ट रूप से प्रयुक्त होने पर स्वर कहलाए तथा प्रयोग में न आने पर श्रुति कहलाए, ऐसी अनुरणनात्मक तथा अनुरंजक ध्वनि को श्रुति कहा जाता है। संगीत पारिजात के अनुसार जर्जा सुनी जाए वही श्रुति है।

श्रुति अर्थात जो सुनाई दे। हम अनेक ध्वनियाँ सुनते हैं। इनमें से कई ध्वनियाँ ऐसी होती हैं जो रंजक नहीं होती है। इन ध्वनियों में मधुरता का आभाव रहता है। ऐसी ध्वनियाँ संगीत के उपयोग में नहीं आती। अतः संगीत में केवल मधुन, रंजक तथा स्पष्ट ध्वनियाँ ही ली जाती हैं। श्रुति स्वरों की क्रमिक उच्चता का एक माप है। नाद के एक स्थान में अनेक नाद होते हैं। उनमें से जो स्पष्ट हों तथा सुने जा सकें, वह श्रुतियाँ कहलाते हैं। जो नाद अस्पष्ट तथा सुनाई न दें वे नाद सहायक नादों का रूप धारण करते हैं तथा निकटवर्ती स्वर की सहायता करते हैं।

ध्वनियाँ अनेक हैं पर संगीत में केवल 22 ध्वनियों को ही लिया गया है। केवल 22 ध्वनियाँ ही लेने के विषय में संगीत परिजात में कहा गया है कि हृदय स्थान में 22 नाड़ियाँ हैं। उन सभी के नाद स्पष्ट रूप से सुने जा सकते हैं इसलिए उन्हें ही

श्रुति कहा जाता है। सभी विद्वानों ने 22 श्रुतियाँ मानी हैं परन्तु केवल कोहल ने अपने ग्रंथ कोहलम् में 66 श्रुतियों की चर्चा की है। मंद्र, मध्य तथा तार इन तीनों सप्तकों में श्रुतियों की कुल संख्या 22×3=66 हो जाती है।

श्रुति नाम

22 श्रुतियाँ एक दूसरे से क्रमिक ऊँची ध्वनियों हैं. घ अर्थात दूसरी श्रुति की तारता पहली श्रुति की तारता से क अधिक है। क्योंकि श्रुतियाँ एक दूसरे से ऊँची ध्वनियाँ है स अतः विद्वानों ने हर ध्वनि (श्रुति) को अलग-अलग नाम क दिए। विद्वानों ने श्रुतियाँ तो 22 ही मानी हैं परन्तु इनके आ नाम में अंतर पाया जाता है। भरत, नारद तथा दत्तिल के अनुसार श्रुतियों के नाम इस प्रकार हैं

श्रुति संख्या	**भरत**	**दतिल**	**नारद**
1.	तीव्रा	नांदी	सिद्धा
2.	कुमुद्वती	चालनिका	प्रभावती
3.	मँद्रा	रसा	कांता
4.	छंदोवती	सुमुखी	सुप्रभा
5.	दयावती	चित्रा	शिखा
6.	रजनी	घना	दीप्तिमति
7.	रक्तिका	विचित्रा	उग्रा
8.	रौद्री	मातंगी	ह्रदी
9.	क्रोधा	सरसा	निर्वीरी
10.	वज्रिका	भृता	दीरा
11.	प्रसारिणी	मधुकरी	सर्पहरा
12.	प्रीति	मैत्री	क्षांति
13.	मार्जनी	शिवा	विभूति

14.	क्षिति	माधवी	मालिनी
15.	रक्ता	बाला	चपला
16.	संदीपनी	शारंगरति	वाला
17.	आलापनी	कला	सर्वरंता
18.	मदंती	कलखा	शांता
19.	रोहिणी	माला	विकलिनी
20.	रम्या	विशाला	हृदयोन्मूलिनी
21.	उग्रा	जया	विसारिणी
22.	क्षोभिणी	मातेत्री	प्रसूना

श्रुति जाति

प्राचीन विद्वानों ने 22 श्रुतियों को अपने-अपने मत के अनुसार अलग-अलग जातियों मे बांटा। संगीताचार्य चतुर ने श्रुतियों को उसकी प्रकृति के अनुसार 4 भागों मे बांटा। उनके अनुसार उच्च तथा रुक्ष ध्वनि को वातज, गंभीर तथा घनशील ध्वनि को पितज एवं मधुर तथा सुकुमार ध्वनि को कफ़ज कहा। चौथे भाग ने इन तीनों के साधारणीकरण को सन्निपात कहा। रस तथा भाव के आधार पर 22 श्रुतियों को पाँच जातियों मे बांटा गया है। ये पाँच जातियाँ है दीप्ता, आयता, करुणा, मृदु तथा मध्या।

क्रम	जाति	श्रुति नाम	रस
1	दीप्ता	तीव्रा, रौद्री, वज्रिका, उग्रा	वीर, अद्भुत
2	आयता	कुमुद्वती, क्रोधा, प्रसारिणी, संदीपनी, रोहिणी	शृंगार, हास्य
3	करुणा	दयावती, आलापनी, मदंती	करूण, रौद्र, वीभत्स
4	मृदु	मंदा, रति, प्रीति, क्षिति	दास्य, वात्सल्य
5	मध्या	छंदोवती, रजनी, मार्जनी, रक्तिका, रम्या, क्षोभिनी	शांत

श्रुति संख्या

महर्षि मतंग के अनुसार श्रुति केवल एक है, उनके अनुसार ध्वनि के रूप कितने भी हो सकते है पर वह नाद एक ही है जो संगीत की भाषा में 'श्रुति' कहलाता है। जैसे धुआँ चाहे कितना भी रंग बदले उसका नाम धुआँ ही रहता है वैसे ही ध्वनि भी है। विश्वासु के मत में श्रुति दो हैं- पहली स्वर श्रुति तथा दूसरी अंतर श्रुति, स्वर श्रुति का अर्थ है 'शुद्ध स्वर' अंतर श्रुति का अर्थ है 'अंतर स्वर'। तुम्बुरू आदि कुछ विद्वान वात्त, पित, कफ तथा सन्निपात नामक 4 प्रकार की श्रुतियाँ मानते हैं।

श्रुति की विशेषताएं-

नाद श्रवणावस्था में श्रुति तथा वयदतावस्था में स्वर कहलाता है। प्राचीन काल से ही विद्वान इस बात से सहमत थे। नाद जो प्रयुक्त नहीं हुआ श्रुति है तथा जब वह प्रयुक्त हो जाता है तो वही स्वर कहलाता है। श्रुनि की निम्न विशेषताएँ कही गई हैं-

(1) श्रुति वह है जो पहचानी जा सके।

(2) श्रुति वह है जो प्रयुक्त की जा सके।

(3) श्रवण भावना व्यक्त करने में सक्षम है।

(4) श्रुति स्पष्ट रूप से सुनाई देनी चाहिए।

(5) यह स्वर की तारता नापने का मापदंड हो।

(6) ध्वनि का सूक्ष्म भाग श्रुति है।

(7) यह स्वर का अभिन्य अंग है।

22 श्रुतियों को मुख्य रूप से 7 स्वरों में बाँटा गया है। स्व इस विभाजन के लिए एक नियम प्राचीन काल से ही चला आ रहा है-

चतुश्चतुश्चतुश्चैव षड्जमध्यमपंचमा।

द्वै द्वै निषादगांधा त्रिस्त्री ऋषभधैवतो

अर्थात षड्ज, मध्यम तथा पंचम चार 2 श्रुतियों वाले, गंधार तथा निषाद दो-2 श्रुतियों वाले, ऋषभ तथा धैवत वी तीन-तीन श्रुतियों वाले स्वर हैं। इसी आधार पर एक सब सप्तक की 22 श्रुतियों को 7 शुद्ध स्वरों में बाँटा गया है। है इसी आधार पर षड्ज को चौथी श्रुति पर, ऋषभ को सन सातवीं श्रुति पर, गंधार को नवीं श्रुति पर, मध्यम को तेरहवी स श्रुति पर, पंचम को सत्रहवीं श्रुति पर, धैवत स्वर को बीसवीं श्रुति पर तथा निषाद को बाइसवीं श्रुति पर स्थापित 22 किया गया। इस प्रकार 4-3-2-4-4-3-2 श्रुतियों के अंतर पर स्वर स्थापित किए गए, प्राचीन समय में दो. विकृत भ स्वर भी माने गए थे (1) काकली निषाद (2) अंतर गंधार।

इन दोनों स्वरों को क्रमशः दूसरी तथा ग्यारहवीं श्रुति के पर स्थापित किया गया।

श्रुति	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14	15	16	17	18	19	20	21	22
		का. नि.		सा			रे		ग		अ. ग.		म				प			ध		नि

का. नि. = काकली निषाद

अ. ग. = अंतर गांधार

प्रमाण श्रुति एवं श्रुति परिमाण

एक सप्तक में 22 श्रुतियां मानी गई तथा उन पर - स्वरों की स्थापना की गई महर्षि भरत ने श्रुति के प्रमाण की र्थ चर्चा की है, अर्थात श्रुति कितनी बड़ी है। भरत ने प्रमाण कश्रुति के विषय में कहा है कि षड्ज ग्राम में पंचम स्वर 17 4 वीं श्रुति पर स्थापित है तथा मध्यम ग्राम में पंचम 16वीं श्रुति पर है। अतः दोनों ग्रामों के पंचम स्वरों का अंतर 17- 16-1 श्रुति का है। इन दोनों ध्वनियों में जो अंतर है वही श्रुति है अर्थात प्रमाण श्रुति है। महर्षि भरत ने प्रमाण श्रुति के अतिरिक्त अन्य श्रुतियों की चर्चा नहीं की है। इससे ये समस्या सामने आई कि क्या सभी 22 श्रुतियाँ समान है या ह को नहीं।

स्वयं मूल्यांकन प्रश्न

6.6 जो कानों द्वारा स्पष्ट सुन जाए क्या कहलाता है ?

1)श्रुति

2) पकड़

3) सप्तक

4) कोई नहीं

6.7 श्रुतियों की संख्या कितनी है?

1) 20

2) 22

3) 86

4) कोई नहीं

6.8 इनमे से कौन सी श्रुति हैं?

1) मंदा

2) धैवत

3) मंद्र

4) कोई नहीं

6.9 इनमे से कौन सी श्रुति नहीं हैं?

1) छंदोवती

2) क्षोभिनी

3) तार

4) मदंती

6.10 इनमे से कौन सी श्रुति है?

1) झप

2) एक

3) चौताल

4) दादरा

5) कई नहीं

6.5 सारांश

थाट और श्रुति विषय भारतीय शास्त्रीय संगीत का एक महत्वपूर्ण विषय है, जिसके बिना अच्छे संगीत की कल्पना भी नहीं की जा सकती। गमक के अभ्यास से शास्त्रीय संगीत मे तैयारी और परिपक्क्वता आती है, जो श्रोताओं को अनायास ही मंत्रमुग्ध करती हैं तथा साथ ही थाट और श्रुति के अध्ययन से किन्हीं भी दो या इससे अधिक रागों के बीच अंतर जानने योग्य होगा। शास्त्रीय संगीत मे गमक अभ्यास से संगीतज्ञ के गायन वादन मे रंजकता और परिपक्क्वता आती है।

6.6 शब्दावली

- राग (Raga): संगीत का एक विशेष संरचनात्मक पद्धति, जो स्वरों के विशेष क्रम का उपयोग करके भावनात्मक और मनोरंजन को व्यक्त करता है।
- ताल (Taal): संगीत में अंकित समय स्तर को ताल कहा जाता है, जो गायन या वादन के साथ समय की गणना करने में मदद करता है।
- लय (Lay): संगीत में गति या चलन को लय कहा जाता है, जो ताल की गति को निर्दिष्ट करता है।
- रागिनी (Ragini): रागों की सहायक संगीत पद्धति जिसमें संगीत रागों के विभिन्न अनुभवों और भावों को व्यक्त करने के लिए मेलोडी और ताल का उपयोग किया जाता है।
- श्रुति (Shruti): संगीत में सबसे छोटे स्वर को श्रुति कहा जाता है, जो स्वर स्थान पर किसी भी विस्तार में पाया जा सकता है।

- स्वर (Swar): संगीत में विभिन्न ऊर्जाओं को स्थान देने वाले तारों को स्वर कहा जाता है, जो संगीत के मूल भाग हैं।
- मेलोडी (Melody): संगीत में स्वरों के विशेष क्रम का एक संरचित और आकर्षक संयोजन, जिससे एक गाना या संगीत कविता का निर्माण होता है।
- अलंकार (Alankaar): संगीत में आकर्षकता और सौंदर्य को बढ़ाने के लिए स्वरों या ताल के विशेष प्रयोग को अलंकार कहा जाता है।

6.7 स्वयं जांच अभ्यास प्रश्नों के उत्तर

आत्म-मूल्यांकन प्रश्न 1

6.1 उत्तर: 2

6.2 उत्तर: 4

6.3 उत्तर: 4

6.4 उत्तर: 3

6.5 उत्तर: 1

आत्म-मूल्यांकन प्रश्न 2

6.6 उत्तर: 1

6.7 उत्तर: 2

6.8 उत्तर: 1

6.9 उत्तर: 3

6.10 उत्तर: 5

6.8 संदर्भ

भातखंडे, विष्णुनारायण. (1970). कर्मिक पुस्तक मलिका. खंड 1-6, संगीत कार्यालय हाथरस।

श्रीवास्तव, हरिश्चद्र. (2015). राग परिचय (भाग 1), संगीत सदन प्रकाशन, इलाहबाद।

मृत्युंजय, डॉ. शर्मा. (2000). संगीत मैनुअल. ए.जी. पब्लिकेशन, दिल्ली।

श्रीवास्तव, हरिश्चद्र. (2010). राग परिचय (भाग 4), संगीत सदन प्रकाशन, इलाहबाद।

प्रो. केशव शर्मा द्वारा साक्षात्कार से प्राप्त जानकारी।

डॉ. मृत्युंजय शर्मा द्वारा साक्षात्कार से प्राप्त जानकारी।

डॉ. निर्मल सिंह द्वारा साक्षात्कार से प्राप्त जानकारी।

6.9 अनुशंसित पठन

श्रीवास्तव, हरिश्चद्र. (2015). राग परिचय (भाग 2), संगीत सदन प्रकाशन, इलाहबाद।

श्रीवास्तव, हरिश्चद्र. (1998). मधुर स्वरलिपि संग्रह. संगीत सदन प्रकाशन, इलाहबाद।

6.10 पाठगत प्रश्न

प्रश्न 1. थाट विषय का परिचय लिखिए।

प्रश्न 2. थाट का अर्थ विस्तार और इसके प्रकारों को लिखें।

प्रश्न 3. श्रुति का अर्थ विस्तार सहित लिखें।

प्रश्न 4. श्रुति का अर्थ और श्रुति के प्रकारों को विस्तार सहित लिखें।

इकाई -7
वादी, संवादी, अनुवादी और विवादी स्वर और राग लक्षण

इकाई की रूपरेखा

7.1	भूमिका
7.2	उद्देश्य
7.3	वादी, संवादी, अनुवादी और विवादी स्वर परिचय
	स्वयं जांच अभ्यास 1
7.4	राग लक्षण परिचय
	स्वयं जांच अभ्यास 2
7.5	सारांश
7.6	शब्दावली
7.7	स्वयं जांच अभ्यास प्रश्नों के उत्तर
7.8	संदर्भ
7.9	अनुशंसित पठन
7.10	पाठगत प्रश्न

7.1 भूमिका

संगीत (गायन तथा वादन) में, स्नातक के क्रियात्मक पाठ्यक्रम MUSA103 की यह सातवीं इकाई है। इस इकाई में संगीत, विशेष रूप से गायन और सितार वाद्य के संदर्भ में, वादी, संवादी, अनुवादी और विवादी स्वर तथा राग लक्षण का परिचय एवं विस्तृत अध्ययन किया गया है।

उत्तर भारतीय शास्त्रीय संगीत में रागों का प्रस्तुतिकरण विशेष रूप से होता है, जो सुनने में मधुरता से युक्त, कर्णप्रिय, वैचित्रतापूर्ण तथा आनंददायक होता है। आज के समय में शास्त्रीय संगीत के कलाकार रागों को अपने मंच प्रदर्शन के समय प्रस्तुत करते हैं। रागों में मधुरता और वैचित्र्य लाने के लिए वादी, संवादी, अनुवादी और विवादी स्वर तथा राग लक्षण का अभ्यास किया जाता है। वादी, संवादी, अनुवादी और विवादी स्वर तथा राग लक्षण के अभ्यास से गायन मे परिपक्क्वता और वादक के वादन मे मधुरता और तैयारी साफ झलकती है। वादी, संवादी, अनुवादी और विवादी स्वर तथा राग लक्षण विषय के अध्ययन से इनसे जुड़े विज्ञान को जानने मे सहायता मिलेगी।

इस इकाई के अध्ययन के पश्चात् विद्यार्थी वादी, संवादी, अनुवादी और विवादी स्वर तथा राग लक्षण विषय का अर्थ परिभाषा इनके प्रकारों के बारे मे विस्तार से अध्ययन कर पाएंगे तथा साथ ही सितार वादन पर रागों और श्रुति अध्ययन के माध्यम से अपने वादन मे मधुरता ला सकेंगे।

7.2 उद्देश्य

इस इकाई का अध्ययन करने के पश्चात् विद्यार्थी

- वादी विषय का अर्थ समझ सकेंगे।
- संवादी विषय का अर्थ समझ सकेंगे।
- अनुवादी विषय का अर्थ समझ सकेंगे।
- विवादी विषय का अर्थ समझ सकेंगे।
- राग लक्षण का अर्थ समझ पाएंगे।

- राग लक्षण के विभिन्न प्रकारों को विस्तार से समझ सकेंगे।

इन उद्देश्यों के माध्यम से, विद्यार्थी न केवल वादी, संवादी, अनुवादी और विवादी स्वर तथा राग लक्षण के तकनीकी पहलुओं को जान पाएंगे, बल्कि इसके गहरे सांगीतिक, सांस्कृतिक और भावनात्मक महत्व को भी समझ सकेंगे। इससे उनके संगीत के प्रति दृष्टिकोण में गहराई और समृद्धि आएगी, साथ ही मंच प्रदर्शन मे परिपक्क्वता का अनुभव भी प्राप्त होगा, जो कि उनके भविष्य में सहायक सिद्ध होगा।

7.3 वादी, संवादी, अनुवादी और विवादी स्वर परिचय

वादी

ऐसा स्वर जो राग मे बहुतायत प्रयोग किया जाए, वादी स्वर कहलाता है। कहने का अर्थ यह है कि ऐसा स्वर जो राग मे बार बार प्रयोग किया जाए वो वादी स्वर कहलाता है। जिस प्रकार किसी राज्य मे सबसे प्रमुख स्थान राजा का होता है ठीक उसकी प्रकार राग मे प्रमुख स्थान वादी स्वर का होता है। उदाहरण के लिए राग यमन का वादी स्वर ग है, तो ग स्वर को अन्य स्वरों के अपेक्षा अधिक गाया या बजाया (प्रयोग) जाएगा।

संवादी

वादी स्वर के बाद जो स्वर बहुत बार प्रयोग किया जाए उसे संवादी स्वर कहते हैं। अर्थात वादी स्वर से काम और अन्य स्वरों से ज्यादा प्रयोग किया जाने वाला स्वर संवादी स्वर कहलाता है। जिस प्रकार किसी भी राज्य मे राजा के पश्चात सेनापति का स्थान प्रमुख होता है, ठीक उसी प्रकार राग मे भी वादी के एकदम बाद संवादी स्वर का स्थान आता है। उदाहरण के लिए राग यमन का वादी स्वर ग है और संवादी स्वर नि है, तो नि स्वर को ग स्वर की अपेक्षा कम और अन्य स्वरों की अपेक्षा अधिक गाया या बजाया (प्रयोग) जाएगा।

अनुवादी

वादी और संवादी स्वरों के पश्चात जो शेष स्वर बच जाते हैं वे अनुवादी स्वर कहलाते हैं। जिस प्रकार राज्य मे राजा और मंत्री के पश्चात प्रजा का स्थान आता है, ठीक उसी प्रकार राग मे वादी और संवादी के पश्चात अनुवादी स्वर का स्थान

आता है। उदाहरण के लिए राग यमन का वादी स्वर ग है और संवादी स्वर नि है, तो ग और नि स्वरों के अलावा जो स्वर शेष बचे वो अनुवादी स्वर हैं।

विवादी

राग मे ऐसा स्वर जो विवाद की स्थिति पैदा करे, विवादी स्वर कहलाता है। अर्थात राजा के राज्य मे जो स्थान शत्रु का होता है, ठीक वही स्थान राग मे विवादी स्वर का होता है। प्रमुखतः इस स्वर का कार्य राग मे विवाद उत्पन्न करना है, अर्थात विवाद उत्पन्न करना है। उदाहरण के लिए राग भूपाली के स्वरों (सा रे ग प ध सां) म और नि विवादी स्वर कहलाएंगे।

स्वयं मूल्यांकन प्रश्न

7.1 राग मे जो जिस स्वर को राजा का स्थान प्राप्त है उसे क्या कहते हैं?

1) संवादी

2) वादी

3) अनुवादी

4) विवादी

5) कोई नहीं

7.2 राग मे जो जिस स्वर को मंत्री का स्थान प्राप्त है उसे क्या कहते हैं?

1) संवादी

2) वादी

3) अनुवादी

4) विवादी

5) कोई नहीं

7.3 राग मे जो जिन स्वरों को प्रजा का स्थान प्राप्त है उसे क्या कहते हैं?

1) संवादी

2) वादी

3) अनुवादी

4) विवादी

5) कोई नहीं

7.4 राग मे जो जिस स्वर को शत्रु का स्थान प्राप्त है उसे क्या कहते हैं?

1) संवादी

2) वादी

3) अनुवादी

4) विवादी

5) कोई नहीं

7.5 राग मे जो जिस स्वर पूर्णतः वर्जित किया जाता है, उसे क्या कहते हैं?

1) संवादी

2) वादी

3) अनुवादी

4) वर्जित स्वर

5) कोई नहीं

7.6 राग भूपाली का वादी स्वर क्या है?

1) रे

2) ग

3) प

4) ध

7.7 राग भूपाली का संवादी स्वर क्या है?

1) रे

2) ग

3) प

4) ध

7.8 राग भूपाली का अनुवादी स्वर क्या है?

1) रे

2) ग

3) नि

4) ध

7.9 राग भूपाली का विवादी स्वर क्या है?

1) रे

2) ग

3) म

4) ध

7.4 राग लक्षण

आचार्य भरत ने नाट्यशास्त्र में जाति के सन्दर्भ में दशविध लक्षण कहें हैं

जैसा-

ग्रहांशौ तार मन्द्रो च न्यासोपन्यास एव च। अल्पत्वं च बहुत्वं च शाडवौडविते तथा।

अर्थात् ग्रह, अंश, तार, मन्द्र, न्यास, अपन्यास, अल्पत्व, बहुत्व, षाडत्व और औडत्व ये दस जाति के लक्षण कहे हैं, जो कि जाति गायन के सन्दर्भ में कहे गए है। जब जाति गायन के पश्चात राग गायन प्रारम्भ हुआ तो विद्वज्जनों ने उन्हीं जाति लक्षणों को राग गायन में यथावत स्वीकार कर उनका पालन किया। कुछ लक्षण आधुनिक समय में परिवर्तित हो

अन्य नाम से भी प्रचलित हुए हैं जैसे अंश स्वर आज का वादी स्वर माना जाता है तथा कुछ नये लक्षण सम्मिलित भी हुए हैं जैसे- आरोह-अवरोह, वादी, संवादी, अनुवादी, पूर्वांग-उतरांग इत्यादि।

आधुनिक समय में राग के निम्नलिखित लक्षण माने जाते हैं।

1. राग का प्रथम लक्षण, राग में रंजकता का होना अनिवार्य है।

2. राग में कम से कम पांच स्वर होना अनिवार्य है अर्थात् पांच स्वरों से कम का राग मान्य नहीं होता।

3. राग किसी न किसी थाट से उत्पन्न होना चाहिए।

4. किसी भी राग में षड्ज स्वर वर्जित नहीं हो सकता।

5. राग में म और प एक साथ वर्जित नहीं हो सकते यदि किसी राग में पंचम के साथ शुद्ध मध्यम भी वर्जित हो, तो उस स्थिति में तीव्र मध्यम का उस राग में होना अनिवार्य होता है।

6. राग में आरोह-अवरोह, वादी-संवादी, समय, पकड़ का होना अनिवार्य है।

7. राग में किसी स्वर के दोनों रूप अर्थात् शुद्ध और विकृत साथ-साथ प्रयोग नहीं किये जाते है। जिन रागों में दोनों रूप ग्राह्य हो उनमें शुद्ध स्वर का प्रयोग आरोह में व कोमल अवरोह में प्रयोग किया जाता है। उदाहरण के लिए राग खमाज में निषाद के दोनों रूपों का प्रयोग होता है ऐसे में आरोह में शुद्ध नि व कोमल नि का प्रयोग अवरोह में होता है। इस सन्दर्भ में राग ललित व मियां मल्हार अपवाद स्वरूप हैं जिनमें स्वरों के दोनों रूप एक साथ प्रयोग मान्य हैं।

8. अंग की प्रधानता निश्चित होती है अर्थात् राग पूर्वांग प्रधान है या उत्तरांग प्रधान ।

स्वयं मूल्यांकन प्रश्न

7.10) राग मे काम से काम कितने स्वर अनिवार्य हैं?

1) छः

2) सात

3) पाँच

4) इनमे से कोई नहीं।

7.11) राग में कौन सा स्वर वर्जित नहीं किया जा सकता?

1) ग

2) म

3) प

4) सा

7.12) राग में एक समय मे कौन से से दो स्वर वर्जित नहीं किए जा सकते है ?

1) मप

2) मध

3) पनि

4) साग

7.13) राग मे ... होना अनिवार्य है।

1) आरोह

2) अवरोह

3) पकड़

4) आरोह, अवरोह और पकड़

7.14) 4 स्वरों वाला राग पहचानो।

1) मालकौंस

2) श्री

3) पूरिया

4) तोड़ी

7.5 सारांश

वादी, संवादी, अनुवादी और विवादी स्वर तथा राग लक्षण विषय भारतीय शास्त्रीय संगीत का एक महत्वपूर्ण विषय है, जिसके बिना अच्छे संगीत की कल्पना भी नहीं की जा सकती। इनके अभ्यास से शास्त्रीय संगीत मे तैयारी और परिपक्क्वता आती है, जो श्रोताओं को अनायास ही मंत्रमुग्ध करती हैं तथा साथ ही वादी, संवादी, अनुवादी और विवादी स्वर तथा राग लक्षण के अध्ययन से किन्हीं भी दो या इससे अधिक रागों के बीच अंतर जानने योग्य होगा।

7.6 शब्दावली

- राग (Raga): संगीत का एक विशेष संरचनात्मक पद्धति, जो स्वरों के विशेष क्रम का उपयोग करके भावनात्मक और मनोरंजन को व्यक्त करता है।
- ताल (Taal): संगीत में अंकित समय स्तर को ताल कहा जाता है, जो गायन या वादन के साथ समय की गणना करने में मदद करता है।
- लय (Lay): संगीत में गति या चलन को लय कहा जाता है, जो ताल की गति को निर्दिष्ट करता है।
- रागिनी (Ragini): रागों की सहायक संगीत पद्धति जिसमें संगीत रागों के विभिन्न अनुभवों और भावों को व्यक्त करने के लिए मेलोडी और ताल का उपयोग किया जाता है।
- श्रुति (Shruti): संगीत में सबसे छोटे स्वर को श्रुति कहा जाता है, जो स्वर स्थान पर किसी भी विस्तार में पाया जा सकता है।
- स्वर (Swar): संगीत में विभिन्न ऊर्जाओं को स्थान देने वाले तारों को स्वर कहा जाता है, जो संगीत के मूल भाग हैं।
- मेलोडी (Melody): संगीत में स्वरों के विशेष क्रम का एक संरचित और आकर्षक संयोजन, जिससे एक गाना या संगीत कविता का निर्माण होता है।
- अलंकार (Alankaar): संगीत में आकर्षकता और सौंदर्य को बढ़ाने के लिए स्वरों या ताल के विशेष प्रयोग को अलंकार कहा जाता है।

7.7 स्वयं जांच अभ्यास प्रश्नों के उत्तर

आत्म-मूल्यांकन प्रश्न 1

7.1) उत्तर: 2

7.2) उत्तर: 1

7.3) उत्तर: 3

7.4) उत्तर: 4

7.5) उत्तर: 4

7.6) उत्तर: 2

7.7) उत्तर: 4

7.8) उत्तर: 1

7.9) उत्तर: 3

आत्म-मूल्यांकन प्रश्न 2

7.10) उत्तर: 3

7.11) उत्तर: 4

7.12) उत्तर: 1

7.13) उत्तर: 4

7.14) उत्तर: 2

7.8 संदर्भ

भातखंडे, विष्णुनारायण. (1970). कर्मिक पुस्तक मलिका. खंड 1-6, संगीत कार्यालय हाथरस।

श्रीवास्तव, हरिश्चद्र. (2015). राग परिचय (भाग 1), संगीत सदन प्रकाशन, इलाहबाद।

मृत्युंजय, डॉ. शर्मा. (2000). संगीत मैनुअल. ए.जी. पब्लिकेशन, दिल्ली।

श्रीवास्तव, हरिश्चद्र. (2010). राग परिचय (भाग 4), संगीत सदन प्रकाशन, इलाहबाद।

प्रो. केशव शर्मा द्वारा साक्षात्कार से प्राप्त जानकारी।

डॉ. मृत्युंजय शर्मा द्वारा साक्षात्कार से प्राप्त जानकारी।

डॉ. निर्मल सिंह द्वारा साक्षात्कार से प्राप्त जानकारी।

7.9 अनुशंसित पठन

श्रीवास्तव, हरिश्चद्र. (2015). राग परिचय (भाग 2), संगीत सदन प्रकाशन, इलाहबाद।

श्रीवास्तव, हरिश्चद्र. (1998). मधुर स्वरलिपि संग्रह. संगीत सदन प्रकाशन, इलाहबाद।

7.10 पाठगत प्रश्न

प्रश्न 1 वादी विषय का परिचय लिखिए।

प्रश्न 2. संवादी विषय का परिचय लिखिए।

प्रश्न 3 अनुवादी विषय का परिचय लिखिए।

प्रश्न 4. विवादी विषय का परिचय लिखिए।

प्रश्न 5. वादी, संवादी अनुवादी और विवादी विषय का परिचय लिखिए।

प्रश्न 6. वादी और संवादी विषय का परिचय लिखिए।

प्रश्न 7. अनुवादी और विवादी विषय का परिचय लिखिए।

प्रश्न 8. वादी और विवादी विषय का परिचय लिखिए।

प्रश्न 9. संवादी और अनुवादी विषय का परिचय लिखिए।

प्रश्न 10. राग लक्षण विषय का परिचय लिखिए।

प्रश्न 11. राग लक्षण विषय का परिचय एवं राग के नियमों को विस्तार से लिखिए।

इकाई - 8
राग यमन,राग भूपाली और राग विहाग

इकाई की रूपरेखा

8.1	भूमिका
8.2	उद्देश्य
8.3	यमन राग परिचय
	स्वयं जांच अभ्यास 1
8.4	भूपाली राग परिचय
	स्वयं जांच अभ्यास 2
8.5	विहाग राग परिचय
	स्वयं जांच अभ्यास 3
8.6	सारांश
8.7	शब्दावली
8.8	स्वयं जांच अभ्यास प्रश्नों के उत्तर
8.9	संदर्भ
8.10	अनुशंसित पठन
8.11	पाठगत प्रश्न

8.1 भूमिका

संगीत (गायन तथा वादन) में, स्नातक के क्रियात्मक पाठ्यक्रम MUSA103 की यह आठवीं इकाई है। इस इकाई में संगीत, विशेष रूप से गायन और सितार वाद्य के संदर्भ में यमन,भूपाली और विहाग का अर्थ परिचय और विस्तृत अध्ययन किया गया है।

उत्तर भारतीय शास्त्रीय संगीत में रागों का प्रस्तुतिकरण विशेष रूप से होता है, जो सुनने में मधुरता से युक्त, कर्णप्रिय, वैचित्रतापूर्ण तथा आनंददायक होता है। रागों के वादी सवादी और अनुवादि स्वरों के साथ अगर सही न्याय किया जाए तो राग अनायास ही श्रोता को मंत्रमुग्ध कर देते हैं। यमन,भूपाली और विहाग राग भी ऐसे ही मधुर राग है जिनके अध्ययन के पश्चात विद्यार्थी इन रागों को समझ सकेगा और इनके अभ्यास से अपने क्रियात्मक पक्ष को उच्च स्तर पर निखार सकता है।

8.2 उद्देश्य

इस इकाई का अध्ययन करने के पश्चात् विद्यार्थी

- यमन राग का अर्थ समझ सकेंगे।
- भूपाली राग का अर्थ समझ सकेंगे।
- विहाग राग का अर्थ समझ सकेंगे।

इन उद्देश्यों के माध्यम से, विद्यार्थी न केवल यमन,भूपाली और विहाग राग के तकनीकी पहलुओं को जान पाएंगे, बल्कि इसके गहरे सांगीतिक, सांस्कृतिक और भावनात्मक महत्व को भी समझ सकेंगे। इससे उनके संगीत के प्रति दृष्टिकोण में गहराई और समृद्धि आएगी, साथ ही मंच प्रदर्शन मे परिपक्क्वता का अनुभव भी प्राप्त होगा, जो कि उनके भविष्य में सहायक सिद्ध होगा।

8.3 राग यमन परिचय

राग यमन

राग- यमन

थाट- कल्याण

जाति- सम्पूर्ण

वादी- ग

संवादी- नि

स्वर- म॑ तीव्र और शेष स्वर शुद्ध

वर्जित स्वर- ....

न्यास- ग प नि

समय- रात्रि प्रथम पहर

समप्राकृतिक राग- यमन कल्याण

आरोह- ऩि रे ग म॑ प म॑ ध नि रें सां

अवरोह- सां नि ध प म॑ ध प म॑ ग रे नि रे सा

पकड़- ग रे ग प म॑ ग ग प ध नि ध प

स्वयं मूल्यांकन प्रश्न

8.1 राग यमन का वादी स्वर कौन सा है ?

1) ग

2) ध

3) प

4) कोई नहीं

8.2 राग यमन का संवादी स्वर कौन सा है ?

1) ग

2) ध

3) नि

4) कोई नहीं

8.3 राग यमन की जाति क्या है?

1) सम्पूर्ण - सम्पूर्ण

2) सम्पूर्ण- षाड़व

3) षाड़व- सम्पूर्ण

4) कोई नहीं

8.4 राग यमन का समप्राकृतिक राग कौन सा है?

1) भैरव

2) यमन कल्याण

3) देश

4) कोई नहीं

8.5 राग यमन का थाट कौन सा है?

1) कल्याण

2) बिलावल

3) आसावरी

4) कोई नहीं

8.4 राग भूपाली परिचय

राग भूपाली

राग- भूपाली

थाट- कल्याण

जाति- औड़व- औड़व

वादी- ग

संवादी- ध

स्वर- सभी स्वर शुद्ध

वर्जित स्वर- म और नि

न्यास- ग प ध

समय- सायं काल

समप्राकृतिक राग- देशकर

आरोह- सा रे ग प ध सां

अवरोह- सां ध प ग रे सा

पकड़- सा ध़ रे सा , ग रे ग , पग ध प, ध सां ध रें सां

स्वयं मूल्यांकन प्रश्न

8.6 राग भूपाली का वादी स्वर कौन सा है ?

1) ग

2) ध

3) प

4) कोई नहीं

8.7 राग भूपाली का संवादी स्वर कौन सा है ?

1) रे

2) ध

3) ग

4) कोई नहीं

8.8 राग भूपाली की जाति क्या है?

1) सम्पूर्ण - सम्पूर्ण

2) सम्पूर्ण- षाड़व

3) षाड़व- सम्पूर्ण

4) कोई नहीं

8.9 राग भूपाली का समप्राकृतिक राग कौन सा है?

1) भैरव

2) कलिंगड़ा

3) देशकार

4) कोई नहीं

8.10 राग भूपाली का थाट कौन सा है?

1) कल्याण

2) बिलावल

3) भैरव

4) कोई नहीं

8.5 राग विहाग परिचय

राग विहाग

राग- विहाग

थाट- कल्याण

जाति- औड़व- सम्पूर्ण

वादी- ग

संवादी- नि

स्वर- दोनों म शुद्ध और तीव्र, शेष स्वर शुद्ध

वर्जित स्वर- आरोह मे रे ध

न्यास- ग प नि

समय- रात्रि का दूसरा पहर

समप्राकृतिक राग- .....

आरोह- ऩि सा ग म प नि सां

अवरोह- सां नि ध प म प ग म ग रे सा

पकड़- प म प ग म ग रे सा

स्वयं मूल्यांकन प्रश्न

8.11 राग विहाग का वादी स्वर कौन सा है ?

1) ग

2) ध

3) प

4) कोई नहीं

8.12 राग विहाग का संवादी स्वर कौन सा है ?

1) प

2) नि

3) रे

4) कोई नहीं

8.13 राग विहाग की जाति क्या है?

1) सम्पूर्ण - सम्पूर्ण

2) सम्पूर्ण- षाड़व

3) औड़व - सम्पूर्ण

4) कोई नहीं

8.14 राग विहाग का गायन वादन समय कौन सा है?

1) सुबह का प्रथम पहर

2) सायंकाल

3)रात्रि का दूसरा पहर

4) कोई नहीं

8.15 राग विहाग का थाट कौन सा है?

1) आसावरी

2) कल्याण

3) काफी

4) कोई नहीं

8.6 सारांश

यमन,भूपाली और विहाग राग भारतीय शास्त्रीय संगीत का एक महत्वपूर्ण विषय है, जिसके बिना अच्छे संगीत की कल्पना भी नहीं की जा सकती। ताल के अभ्यास से शास्त्रीय संगीत मे तैयारी और परिपक्क्वता आती है, जो श्रोताओं को अनायास ही मंत्रमुग्ध करती हैं। शास्त्रीय संगीत मे यमन,भूपाली और विहाग राग अभ्यास से संगीतज्ञ के गायन वादन मे रंजकता और परिपक्क्वता आती है।

8.7 शब्दावली

- ताल (Taal): संगीत में अंकित समय स्तर को ताल कहा जाता है, जो गायन या वादन के साथ समय की गणना करने में मदद करता है।
- लय (Lay): संगीत के समान गति को लय कहते हैं, संगीत में लय अत्यंत महत्पूर्ण हैं, लय के बिना संगीत की कल्पना भी करना असंभव हैं।
- मात्रा (Matra): ताल की इकाई को मात्रा कहते हैं।
- ताली (Taali): सम के अलावा अन्य विभागों की पहली मात्रा पर जहाँ हथेली पर दुसरे हाथ की हथेली के आघात द्वारा ध्वनि उत्पन्न की जाती है, उसे ताली कहते हैं।
- खाली (Khali): ताल देते समय जहाँ विभाग की प्रथम मात्र पर ध्वनि न करके केवल हाथ हिलाकर इशारा कर देते हैं, उसे 'खाली' कहते हैं. अधिकतर खाली ताल के बीच की मात्र अथवा उसके आस पास हीं कहीं पड़ती है।
- विभाग (Vibhag): ताल को कुछ निश्चित मात्राओं में बांटना जिससे भरे एवं खाली जगहों का पता लगे उसे विभाग कहते हैं

8.8 स्वयं जांच अभ्यास प्रश्नों के उत्तर

8.1) उत्तर : 1

8.2) उत्तर: 3

8.3) उत्तर: 1

8.4) उत्तर: 2

8.5) उत्तर: 1

आत्म-मूल्यांकन प्रश्न 2

8.6) उत्तर : 1

8.7) उत्तर: 3

8.8) उत्तर: 4

8.9) उत्तर: 3

8.10) उत्तर: 1

आत्म-मूल्यांकन प्रश्न 3

8.11) उत्तर: 1

8.12) उत्तर: 2

8.13) उत्तर: 3

8.14) उत्तर: 3

8.15) उत्तर: 2

8.9 संदर्भ

भातखंडे, विष्णुनारायण. (1970). कर्मिक पुस्तक मलिका. खंड 1-6, संगीत कार्यालय हाथरस।

श्रीवास्तव, हरिश्चद्र. (2015). राग परिचय (भाग 1), संगीत सदन प्रकाशन, इलाहबाद।

मृत्युंजय, डॉ. शर्मा. (2002). संगीत मैनुअल. ए.जी. पब्लिकेशन, दिल्ली।

श्रीवास्तव, हरिश्चद्र. (2010). राग परिचय (भाग 4), संगीत सदन प्रकाशन, इलाहबाद।

प्रो. केशव शर्मा द्वारा साक्षात्कार से प्राप्त जानकारी।

डॉ. मृत्युंजय शर्मा द्वारा साक्षात्कार से प्राप्त जानकारी।

डॉ. निर्मल सिंह द्वारा साक्षात्कार से प्राप्त जानकारी।

8.10 अनुशंसित पठन

श्रीवास्तव, हरिश्चद्र. (2015). राग परिचय (भाग 2), संगीत सदन प्रकाशन, इलाहबाद।

श्रीवास्तव, हरिश्चद्र. (1998). मधुर स्वरलिपि संग्रह. संगीत सदन प्रकाशन, इलाहबाद।

8.11 पाठगत प्रश्न

प्रश्न 1. यमन राग का संक्षिप्त परिचय लिखें।

प्रश्न 2. भूपाली राग का संक्षिप्त परिचय लिखे।

प्रश्न 3 विहाग राग का संक्षिप्त परिचय लिखें।

प्रश्न 4. यमन,भूपाली और विहाग राग के संक्षिप्त परिचय लिखें।

महत्त्वपूर्ण प्रश्न- कार्यभार

प्रश्न 1. अलंकार का अर्थ एवं परिभाषा दे। किन्हीं भी 5 थाटों मे कोई दस अलंकार लिखिए।

प्रश्न 2.उस्ताद अब्दुल करींम खाँ और पंडित जयदेव का संक्षिप्त परिचय लिखिए।

प्रश्न 3. पंडित रवि शंकर और पं० विष्णु नारायण भातखण्डे का संक्षिप्त परिचय लिखिए।

प्रश्न 4. एकताल और झप ताल का परिचय एवं एकगुण और दुगुण लिखिए।

प्रश्न 5. आश्रय राग और गमक विषय का परिचय विस्तार सहित लिखिए।

प्रश्न 6. श्रुति और थाट विषय का परिचय लिखिए।

प्रश्न 7. वादी, संवादी अनुवादी और विवादी और राग लक्षण विषय का परिचय लिखिए।

प्रश्न 8. यमन,भूपाली और विहाग राग के संक्षिप्त परिचय लिखें।